# पाथरक नाव

रमेश नारायण

पहिल संस्करण : दिसंबर १९७२

प्रकाशन : श्रीमती कविता नारायण
उपासना प्रकाशन
९०, श्रीकृष्णनगर
पटना–१



आवरण : श्री आनंद मूर्ति

मुद्रण : कामेश्वर प्रसाद
कालिका प्रेस
आर्यकुमार रोड
पटना–४

मूल्य : दू टाका

……अथाहो पानि मे ऐना जकाँ झलकैत
अपना गामक ओहि थाल-कादो कें,
जाहि मे हमरे लेल
एक गोट रक्तकमल
जनमि कए फुलेबाक हमर आस
अटकल अछि……

समर्पण

## अपना दिस सँ...

इएह, जे

एहि संग्रहक कतेको कथा आकाशवाणीक पटना केन्द्र सँ प्रसारित अछि,

तेँ आकाशवाणीक सौजन्यों सँ ।

लेखक

● कोइली जखन कुहुकैत छैक तऽ के जनैत छैक जे ओ कनैत छैक अथवा गीत गबैत छैक ··· १८

● मोजर भरल लिबल आमक डारि - पाति सँ सटैत सिहकल अबैत बसात एहि पोखरिक पानि मे केहेन छोटका-छोटका हिलकोर उठा देने रहैक···६२

● मोन होन्हि जे छोड़ि कए पड़ा जाइ, किन्तु पटना एबाक काल केर मायक बात मोन पड़ि जान्हि— "बौआ, दम साधि कए रहब। तपेसियाक फल नीके होइत छैक ··· ··· ··· ३६

● मलहोतरा साहेब तखनहिं हिनका पर तमसेबा मे अपन बहुतो शब्द खर्च केने छलाह, जाहि मे 'नीमकहराम' सेहो एक गोट शब्द रहैक··· ··· ७

● जवानीक देहरि पर थकमकायलि ठाढ़ि ओ' फेर नहूँ-नहूँ डेग दैत सौंसे बाध मे जेना सोमनियें टा अबैत छलि··· ४६

● अहाँक संबंधें बहइत ओहि नोर कें जे आँचर मे समेटि लैत छी तऽ लगइत अछि जेना हम अहीं कें अपना आँचरक छाहरि मे लऽ नेने होइ··· ७८

● हमरे टा बुझल अछि जे गिरीश विवाह सँ वधु-प्रवेश धरि अपना कोठली सँ बहार पएर नहि देने छलाह ७०

● सुरुज डुबितहिं कतेक दिनक बिसरल मोन पड़ि आयल सिनेह जकाँ सिहकैत पछबा देह मे ठंढा लगलैक··· ··· ५५

● देवता पर अर्पित हेबा लेल जे फूल तोड़ल जाइत छैक ओकरा मरणो मे एक प्रकारक जीवन रहैत छैक··· ··· ··· ३०

# ठेहियायल मोन घुमाम्रोन बाट

बाबूबजारक अपना गलियारी केर बीत भरिक बाट छोड़ि जखन कमल आगाँ भेलाह, पछबाक सिटसिटी मे सौंसे देह काँटोकाँट भए गेलैन्ह। एहेन जाड़ मे कतहु एक गोट बंडी सँ काज चलय ? दुहू हाथ बंडीक दुहू जेबी मे चल गेलैन्ह। परसुके राखल अठन्नी अभरलैन्ह तऽ एक कप चाह पीबाक जोहि मे बान्हक कातवला चाहक दोकान दिस तेना घिचा जकाँ गलाह जेना कियो मकुआवला बेंत गरदनि मे लगा कए घीच नेने होन्हि।

चुलहा मे कोयलाक लाल-लाल चिनगोरा। ओहि पर भफाइत चाहक केतली। भरि देह तौनी ओढ़ने तीन-चारि गोट रिक्सावला दोकान मे बेंच पर बैसि कए तमाकू चुना रहल छल। ओकरा सबहिक रिक्सा बान्ह पर लागल छलैक। चुलहा पर राखल चाहक केतली केर पेन तऽर सँ बहराइत तावक सोझाँ-सोझी कमल ठाढ़ भए गेलाह।

चाहवला बड्ड देरी कए रहल अछि। नीक छल जे कोनो होटले मे

बैसि कए पिबितहुँ। मुदा, होटलमे तऽ पन्द्रह पाइक हिसाब।—मुट्ठी मे अठन्नी कसा गेलैन्ह। चाहक प्याली नमरि कए जेना टोकलकैन्ह—"बैसि जाउ मालिक!" घोंट नमहर आ' ठोंठ सेरर होमय लगलैन्ह। अठन्नी बढ़ा घूरल पाइ लऽ कए आगाँ बढ़लाह तऽ मोन किछु हल्लुक जकाँ लगलैन्ह—"रौद किछु कड़गर भेलैक आब"—बुदबुदेलाह।

—"परनाम मालिक"—कोयलावला! जेना धक् दऽ लगलैन्ह ई 'परनाम'। अकबका कए प्रत्यभिवादन करैत पान-सिकरेटक दोकान दिस सहटि गेलाह। एकर पछिला मासक पाइ बाँकिये छैक—सिकरेट माँगि कए कनखी सँ देखलथिन्ह: ओ पाइ गनबा मे व्यस्त आँगुर पर हिसाब जोड़ि रहल छल।

ई कोयलावला नीक लोक अछि। कमल एकरा अधे जीवें कहने छलथिन्ह—"कोयलावला, तों पाइ मास लगा कए लेल करऽ।" हिनका मुँह दिस तकैत किछु गुनधुन जकाँ करैत जखन ओ हब दऽ 'बेस' कहि देनें रहैन्ह तऽ ई फक् दऽ निसास छोड़ने छलाह। पछिला मासक पाइ नहियों दऽ कए कोयला लैत कमल केर पत्नी जखन सफाई देने छलथिन्ह तऽ ओ कहने छलैन्ह—"कोनो बात नहि मलकीनी, हमरो घर राजनगरे लग अछि। एके दिसुक लोक छी। मालिक तऽ सिकरेटरिये मे काज करैत छथि किने?" हिनका मुड़ी हिला कए 'हँ' कहला पर ओ बाजल—"हम कतेको सिकरेटरीकेर बाबू कें कोइला दैत छियैन्ह। पाइ आगाँ-पाछाँ भेटितहि अछि।" जखन ई बात कमल केर पत्नी हिनका कहने छलथिन्ह, ओ बाजल छलाह—"एकरा सभक पाइ नहि राखक चाही, नहि जानि ककरा लग की बाजत, किन्तु करू कि?"

गाम सँ डेढ़ कोसपरक हाइ इस्कूल मे जखन कमल मैट्रिक मे गेलाह हिनकर पिताजी हिनकर सौदा अढ़ाइ सै टाका पर पटा नेने छलथिन्ह। ओहि दिन कमल जखन इनार पर गेल छलाह आ' माय तखनहिं घैल भरय आयल छलथिन्ह तऽ घैल कमले भरि नेने छलाह आ' माय इनारक कातमे बलवाक



माय सँ फदकैत ठाढ़ि रहलि छलथिन्ह। बलवाक माय केर अपेक्षाकृत ऊँच स्वरें कहला पर जे "बहिनदाय, ई ककरो अधलाह नहिं केलथिन्ह। दिनकर दिनानाथ हिनकर नीके करथिन्ह—कमलक माय आँचर पसारि सुरुज दिस ताकि कए जखन हाथ जोड़ि देने छलीह तऽ हुनका आँखि सँ ढब दऽ नोर खसि पड़ल छलैन्ह। आ बाभल ठोंठ सँ ओ बाजलि छलीह—"असिरबाद दियौक कनिया, कमला जीबि जाइक आ' मुँह मे उक लगा कए हमरा फेक दिअए।" ई कहैत-कहैत हुनका आँखि सँ दहो-बहो नोर जाय लागल छलैन्ह। ओ घैल उठा कए चलि देने छलीह।

ओहि दिन कमल गाम परक सबटा काज कऽ कए इस्कूल विदा भेलाह। बाट मे हिनका सोचबाक जोग कतेको बात मोन मे आयल छलैन्ह—ई डेढ़ कोस जेबा-एबाक हरानी उठओलहुँ तैं किने, नहि तऽ भाइ मे एकसर, बासडिह छोड़ि कए गनल-गुथल डेढ़ बिगहा जमीन, दलान पर हाड़-हाड़ भेल एकटा बरद—के एक दू गनि कए अढ़ाइ सै टाका दितैह?—फेर, यौत-पिहान गीत-नाद, ढोल-पिपही, खेनाइ-पिनाइ सब कथुक कल्पनाक हिड़ुला पर झुलैत जखन ई डिस्टिक बोडक बान्ह छोड़ि इस्कुलक हत्ता मे पैसल छलाह, इस्कूलक घंटी टनाक दऽ बाजल छलैक आ' हिनकर जेना भक् दऽ निन टुटल छलैन्ह।

जखन अढ़ाइ सै टकाक लहरि मेटेबा लेल तरफर सुद्ध निमाहि लेबाक ललितगर चिट्ठी कमलक भावी ससुर के आयल छलैन्ह तऽ कमलक आँखिक आगाँ हेडमास्टर साहेब साकार भए गेल छलथिन्ह। हुनका सौंसे देह पर सँ पिछरैत-पिछरैत हिनक आँखि पहुँचा पर आबि कए अटकि गेल छलैन्ह। अपना कें रोकितो-रोकितो ई अपना अंतरंग जोगीभाइ कें कहिये देने छलथिन्ह—"हमरा बड़ मोन अछि जे हम कौलेज मे पढ़ी। सुनैत छियैक कलकत्ता मे ट्यूशन भेटैत छैक। हमरा गामक दुखन बाबू ओतहि सँ एम० ए० पास केलन्हि। बाबू कहैत छथि "मैट्रिक कऽ कए टाइप सीख लिहें आ कतहु नौकरी करिहें"। हमरा आब पैरुख नहिं रहल। विवाहक दिन आबि गेल अछि। आर नहिं किछु त घड़ी तऽ देबे करत, बेचि लेब आ' पड़ा जायब।" जोगीभाइ मुसका

देने छल। आह्लादित भए पुछने छलैन्ह—"बरियाती लऽ जेबऽ कि नहिं बाजऽ"। यंत्रवत् हिनका मुँह सँ बहरा गेल छलैन्ह—"जरूर सँ जरूर।"

विवाह मे जखन देबाक क्रम धोती सँ चलि जूता पर आबि कए ठमकि गेल रहैक तऽ कमलक मोन मे किछु तामस जकाँ भेल रहैन्ह मुदा ओ ओहिना मिझा गेल रहैन्ह जेना जाड़ मास मे दलानक आगाँ मे जोड़ल खढ़-पातक घुरारी अपनहिं मिझा जाइत अछि।

ताहू पर जखन एक गोट उचितवक्ता बाजलि छलीह—"चौधरी बजताह कि? हिनका तऽ कीनि लेलियन्हि। रुसल जमैया करताह कि, धीया छोड़ि मोर लेताह कि?"—तऽ कमल पर जेना अस्सी मोन पानि पड़ि गेल छलैन्ह।

मैट्रिक मे प्रथम श्रेणी लऽ कए जाहि दिन कमल गाम छोड़लन्हि हिनकर माय बलवाक माय सँ आध सेर चूड़ा-मुढ़ी पैंच लऽ कए देने छलथिन्ह आ' हिनकर बाबू कतेको ठाम मुँह छानि कए पाँच टाका मात्रक जोगाड़ कए सकल छलाह। पहिलुक बेर जखन महेन्द्रू घाट ई उतरल छलाह तऽ पटनाक बड़का-बड़का मकान देखिकए किछु अदंको जकाँ भेल छलैन्ह, किन्तु मैट्रिकक सफलता मोन पारिकए एक गोट जोसगर संकल्प सेहो मोन मे आयल रहैन्ह—कोनो काज कियैक ने करऽ पड़ए आगाँ पढ़ब धरि अवस्से टा। गामो घरक इस्कूल मे डेरायले सन रहएवला छात्र कें राजधानीक हुलिमालि मे के कोनो थित-वित होमय दितैक? ओ तऽ धनि कही मलहोतरा साहेब कें जे अपना एक दर्जन धिया-पुता केर एकमात्र मास्टर कमल कें राखि पचीस टाका पाबयवला अपना नौकर कें जवाब दए देलथिन्ह आ' कमल हुनका झनकटाहि पत्नीक फज्झतिक तरो मे हुनके टाइपिस्टबाबू लग बैसि कए टाइप करब सीख लेलन्हि। जखन गाम केर कर्जा-वर्जा, पैंच-उधार, उलहन-उपरागक विवरण सँ लऽ कए हिनकर अकर्मण्यता अथवा कृतघ्नता धरिक समाचार सँ भरल भरिगर पिताजीक लिफाफ कमलकें भेटल छलैन्ह, नोकरी टोहियेबा मे पटनाक बाट-घाट, गली-कुची मारि कए ओहि दिन किछु देरी सँ ई डेरा पर आयल



छलाह। मलहोतरा साहेब तखनहिं हिनका पर तमसेबा मे अपन बहुतो शब्द खर्च केने छलाह, जाहि मे "नीमकहराम" सेहो एक गोट शब्द छलैक। नहिं जानि, कोन जादू ओहि शब्द मे रहैक। जखनहिं कमल काज करए बसैत छथि हुनकर ओ शब्द हिनका माथमे औनाय लगैत छन्हि। औफिसेटा मे नहिं आनो खन माथ मे खट-खट जेना बजैत रहैत छन्हि। ओहि खटखटी मे घुरिफिरि कए जेना उएह शब्द अबैत रहैत छन्हि।

ओहि दिन जखन भोरे उठबैत पत्नी कहलथिन्ह—"जाउ टीसन सँ दाढ़ी बनवा आउ। लगैत छी जेना बरख दिनक रोगी रही"—तऽ कमल कें कियो जेना जोर सँ चाबुक मारि देने छलैन्ह। ई सोझे बंडी उपर सँ पहिरि टीसन विदा भए गेल छलाह।

ई जखन सिकरेट लऽ कए आगाँ बढ़लाह, हिनका माथ मे बीतल जीवन केर सबटा घटना जेना घुरुमि-घुरुमि कए आबय लगलैन्ह। हार्डिज पार्क लग आबि कए ई ओहिना दम लेलैन्ह जेना बड़ी काल पानि मे डूबल-डूबल उपर आबि कए कियो दम लैत अछि।

टमटम, साइकिल, कार, बस, ट्रक सब किछु दौड़ल जा रहल छल। जेना सब कें हड़बड़िये होइक। ककरो हेतु कमल जकाँ रवि नहिं, ककरो हिनका सन आराम नहिं, किन्तु हिनका ई आराम आराम सन कियैक नहिं लगैत छन्हि? सरिपहुँ हिनका कोनो रोग छन्हि कि? श्रीमतीजी साँचे तऽ नहिं कहैत छलथिन्ह?

बजार शुरू भऽ गेल। रंग-बिरंगक रेडीमेड कपड़ा सभ—ऊनी, सूती सभक अपूर्व प्रदर्शन। चारू कात चहल-पहल। कियो तऽ एना माथ नहि भरियौने अछि। ई निराशा कियैक? हाले मे तऽ गाँधी मैदान मे एक गोट नेता जी चिचिया कए बाजि गेल छलाह—"युवके राष्ट्रक कर्णधार छथि।" कमल डेढ़ घंटा धरि हुनक व्याख्यान सुनैत रहथि। जखन सभा खतम भेलैक

आ' नेताजी कें लोक अलोमलो कए हवागाड़ी मे बैसौलकैन्ह तऽ ओहि पछवा मे तीन माइल मे तीन गोट सिकरेट सोंटैत जखन ई पैरहि डेरा आयल छलाह तऽ श्रीमतीजी कटाउझ करवा लेल तूल-तैयार रहथिन्ह। कमल हुनका एको बातक उतारा नहि दऽ चुपचाप खा कए सुति रहल छलाह।

सोझाँ मे सैलून! पाँती जोर सँ राखल कुर्सी पर कतेको गोटए बैसल। हाथ मे दैनिक समाचारपत्र, नबका-पुरनका फिल्मफेयर! एक गोट खाली कुर्सीपर बैसि इहो एक बाँचल फिल्म फेयर उठम्रोलन्हि। एहि पुरनको फिल्मफेयर मे रंग-बिरंगक वेशभूषा मे सिने-तारिका सब। किन्तु ककरो ई चिन्हल-थिन्ह नहिं। कतहु झीलक शांत काछारा! कतहु पार्कक हरियर दूबि! ड्राइंग रूमक सोफा! सभ किछु जेना हुनके लोकनिक मुस्कान मे मुसका रहल हो? जीवन केर सभटा कुरूपता जेना हुनका लोकनिक सुन्दरताक डरें पतनुक ान नेने होअए!

—"की केश बनतैक?"···जेना कमल चेहा उठलाह। सिटपिटायल सन कुरसी पर जाकए संक्षिप्त उत्तर देलथिन्ह—"दाढ़ी।" आगाँक ऐना मे हिनका अपन मुँह जेना चिन्हले ने गेलैन्ह। चिन्तनक कड़ी जुटि जकाँ गेलैन्ह—मनुक्ख स्वयं अपना कें कुरूप बनवैत अछि। जीवन जीवाक कला होइत छैक। ओहि मे सब सँ बेसी आवश्यक छैक अपना योग्यताक बोध हैब आ' अपन शक्ति-सामर्थ्य बढ़ेवाक वास्तविक लगन हैब। हम सब सँ हीन छी इएह हमरा घालैत अछि। अपन भविष्य मनुक्ख स्वयं बनवैत अछि अथवा बिगाड़ैत अछि। मोन मे उत्साह रहबाक चाही। चारू कात आनन्दे आनन्द छैक।

हजामक काज पूरा भए गेलैक। ओ लग आबि कए ठाढ़ भए गेलैन्ह। जेबी मे सँ दुअन्नी बहार कऽ कए राखि देलथिन्ह किन्तु ओ कहलकैन्ह—"दू टा नबका पाइ आर चाही।" जेना चोरि करैत कियो देखि नेने होन्हि। दू टा पाइ बहार कऽ कए तकथा पर राखि देलथिन्ह। सैलून सँ बहरा कए बाट पर एलाह तऽ मुँह सँ बहरा गेलैन्ह— "हऽ······ लगैत छल जेना अशौच भेल हो!" पएर मे गति आ' मोन मे स्फूर्ति आयल सन लगलैन्ह। सड़कक



कात मे एक गोट नवयुवक रिक्सावला खूब जोर सँ बीड़ीक सोंट मारि "फू·········" कऽ कए सबटा धुआँ उपर कए फेक देलक। एक गौरवर्णा, दुबरि-दानरि संभ्रान्त महिला कार ड्राइव करैत सर्र दऽ चलि गेलीह। हुनका पातर पानिवला मुँह पर आत्मविश्वासक अपूर्व आभा छलैन्ह। टमटमवला कमल कें देखि जोर सँ चिकरि उठल—"गरदनीबाग!" घोड़ाक लगाम घीचि कए टमटम ठाढ़ सन करैत हिनका पर जिज्ञासाक दृष्टि देलकैन्ह। हिनका थकमकाइत देखि एक गोटए कें केहुनिया कए अपने उतरि गेल। हिनका बैसा कए ओ चारि आँगुर जगह पर अधा-छिधा बैसि गेल। गीतक एक गोट कड़ी मोन पारैत एक चाबुक मारि कए ओ घोड़ाक उत्साह बढ़ओलक।

सबटा रिक्सा जेना सिने-तारिका बनि गेल हो! जरूर कोनो बँगला फिल्म लागल छलैक। टमटम पर कसकल बैसल नवयुवक केर देह जेना फूलि गेलैक। सिनेमाक डायलौग मे प्रशंसाक पुल बन्हैत एक गोट रिक्सा पर आँखि गड़ा देलक। टमटमवला मुड़ी झुका कए मुस्काइत घोड़ा पर फेर एक चाबुकक स्नेह बरिसओलक। घोड़ा कें जेना गौरव भेलैक। अपन चालि पकड़ि कए नीमक केर सरियत देमय लागल।

अगिला गुमटी बन्न रहैक। गाड़ी दूरहि सँ सीटी देलकैक आर सीटी जेना हवा मे उड़िया गेलैक। ····जरूर एक्सप्रेस गाड़ी थीक। एक कोठली सँ जावत दोसर कोठली देखू सौंसे गाड़ी पार।—दोसर गुमटी फूजि गेल रहैक।—वाह रे टमटम, लगैत छल जेना बाटे पड़ायल जाइत हो।—कमल केर मोड़ आगाँ मे रहैन्ह। टमटमवला कें पाइ दऽ कए ई बान्हे बान्ह चलए लगलाह। बान्ह छोड़ि कए गलियारी मे पैसलाह।—आब ई डेरा बदलि लेब, राति-बिराति ई गलियारी चलबा जोग नहिं अछि।

पत्नी डेराक कात मे ठाढ़ि छलथिन्ह। देखितहिं मुसका कए कहलथिन्ह— "बड्ड देरी भऽ गेल। जलखै बनओने कतेक काल सँ बाट ताकि रहल छी। कतए चलि गेलियैक?" कमल हँसि कए कहलथिन्ह—"बुझलहुँ कि हमर रोग आइ छुटि गेल।"

"कोन रोग ?"

"उएह अहाँ जे मोरे कहने रही ?" पत्नी बिहुँसि देलथिन्ह—"अहूँ खूब छी, ओ तऽ ओहिना कहि देने रही। देखियौक तऽ आब अपन मुँह ?"

जलखइ कऽ कए कमल हाथ धोलन्हि। पत्नी पान आनि कए देलथिन्ह। एक हाथ मे पान रहन्हि आ' दोसर हाथ मे लिफाफ।—"अयँ, ई तऽ तार थीक।"—कमल चौंकि उठलाह।" "हँ, अहाँक बाबू केर थिकन्हि। बगल-वला किरायेदार सँ पढ़बौलियैक। अहाँक माय बड्ड असक्क छथिन्ह। हमरा गामे कें दऽ आउ। बड्ड कष्ट मे हेथिन्ह।"

एको टा बात कमल नहि सुनि सकलाह। झपटि कए तार हाथ सँ छीनि लेलथिन्ह। खोलि कए देखितहि देह थरथरा गेलैन्ह। माथक फेर उएह हाल। सब किछु थकमका कए ठाढ़ भए गेल····ओहिनाक ओहिना······ कतहु कोनो गति नहि······ पत्नी ठाढ़······ सगरे दुनिया ठाढ़········ ! माय, सिर्फ माय कें चलैत देखि ओ अपन माथ पकड़ि लेलन्हि, आँखि मुनि लेलन्हि······



# काजरक रेख

टन्... ! टन्...!!— दू गोट घंटी बजलैक ग्रा' परीक्षा-भवन मे ऐंचब सन एक गोट तेहेन स्पंदन भेलैक जेना थूरल मुँहवला साँप बाइ पर एक बेर ऐंचि कए फेर शान्त भए जाइत ग्रछि। "एक घंटा ग्रार......"— प्रोफेसर साहेबक स्वर सौंसे हॉल मे ग्रौनाकए जेना बहार भए गेल। मनोजक सगरे देह पसेना बनबना कए जेना फेक देलकैन्ह। किन्तु, फेर एक तरहक कठोर दृढ़ता मुखमंडल पर चलि एलैन्ह। विचार-प्रवाह उमड़ैत सन लागल —पढ़ब-लिखब व्यर्थ थीक। जिनका पढ़ेबाक पाछाँ घर तबाह भेल हुनका सँ तऽ किछु सिभबे-पकबे नहि करैत छन्हि; इन्टरव्यू दऽ-दऽ कए सब कें नेहाल-सनाथ कए रहल छथि; घरेक ग्राटा गील कऽ कए घर कें आर तनो तरीज कए रहल छथि ग्रा' हम पढ़ि कए कोन बान्ह-पोखरि देब ? किन्तु ई बात हम ककरा बुझाउ ? जखनहि किछु बाजू कि कुकुर जकाँ चारू दिस सँ भाँउँ-भाँउँ करए लगइ जाइत ग्रछि। फुसियाहा इज्जति ग्रा' फूसि प्रतिष्ठा कें ढाल बना कए उपदेशक ढेरी लगा दइ जाइत अछि। डोरी जरि गेल मुदा ऐंठनि नहिं गेलैक। घर पर खढ़ देताह ततबा बुता तऽ छन्हियें नहि

दलान पर बैसइवलाक देह पर चार सँ खढ़ तुबि-तुबि कए खसैत रहैत छन्हि-मुदा उठओनाक पान सँ ठोर रंगि कए गप्प छाँटब आ' मुसकी देब कियो हिनका लोकनि सँ सीखए। ई तऽ सोझे घर मे आगि लगा कए तापब थीक। प्रश्नपत्र पर ओ उपेक्षाक नजरि देलैन्ह। कापी उनटा कए देखलन्हि। दू गोठ पृष्ठ पर अधा-छिधा लिखने छलाह—"मिस रेखा नहिं, काजरक रेखा! देखै छिही दोस्त, ई आँखि आ' ओहि मे ई काजरक रेख! एहि बेर फेर हम ई कालेज नहिं छोड़बौक"—जेना सब टा फेर सँ कियो मानस-पट पर लिख देने होन्हि। एक स्निग्ध मुसकान जेना अबैत-अबैत रहि गेल हो! ओ प्रश्न-पत्र कें मोसरि कए जेबी मे ठूसि लेलन्हि। कापी उठा कए प्रोफेसर साहेब कें धरा देलथिन्ह। हुनका धन्यवाद केर कुभाव सँ अनादर करैत हॉल सँ बहरेलाह। साइकिल उठा कए कैंटीन दिस विदा भए गेलाह।

मनोज कॉलेज केर छाँटल बदमाश सभक सरदार गनल जाइत छलाह। न्यूनतम मोहरीवला पैंट, कमीज केहुनी सँ उपरे धरि मोड़ल। जूताक नोक तेहेन जे अलगे सँ छराक नोक मोन पारि दिअए। माथक केश-कलाप फिल्मी हीरो कें मात करएवला। गौर वर्ण, मझोला कद, किन्तु मजबूत काठी, आर पैंघ-पैंघ आँखि। कॉलेज स्पोर्ट्स छोड़ि हुनका आर कोनो संबंध कॉलेज सँ रहन्हि से तखनहिं बुझि पड़ए जखन हुनका कॉलेजक किरानी कें कनैठी देबाक होन्हि, प्रोफेसर कें हूट करबाक होन्हि अथवा कोनो लड़की कें टीज करबाक होन्हि। हुनका घर सँ कोनो संबंध रहन्हि से तखनहिं बुझि पड़ए जखन हुनका टाका कमैत रहैन्ह। ओहो कमी हुनका एके अवसर पर बुझि पड़ैन्ह जखन नवीनतम फैसनवला कपड़ा बनवेबा मे कोताही होन्हि। नहिं तऽ होटलवला कें अनका सँ पैसा ओसुल करबाक बेर हिनकर काज पड़बे करैक तैं स्वादिष्टो भोजन हिनका हेतु समस्या नहिं बनैत रहैन्ह। मित्रवर्ग अनका सँ आतंकित भए अथवा आतंकित करए लेल हिनका शरण मे एबे करैन्ह तैं जलपान, सिनेमा आदि मे परमूले फलाहार चरितार्थ होन्हि। गाम



सँ टाका एबा मे कनेको बिलम्ब भेलापर पिता कें एतबा लिखब पर्याप्त होन्हि —"सब किछु लऽ कए गाम चल आयब इएह एक टा उपाय आब हमरा सुझैत अछि। ताहू मे तऽ अपनेक उपहासे हैत। गामो-घर मे कैंचाक अभाव मे की होइत छैक से अपने जानितहिं छी आ' ई तऽ शहर थिकैक। हम फेर कोनो चिट्ठी नहिं लिखब। महिनवारीवला टाकाक प्रतीक्षा चारि-पाँच तारीख धरि करब। नहिं एला पर हमरा गाम चलिए आबए पड़त।'

कैंटीनक ओलती मे साइकिल लगा कए मनोज ओहि गोलका टेबुल दिस बढ़लाह जेमहर सँ 'हलो मनोज' केर तीन-चारि गोट सम्मिलित स्वर हिनक स्वागत केलकैन्ह। "ब्वाय, साहब के लिए चाय बनाओ"— फेर दू-तीन स्वर संगहि श्रुतिगोचर भेल। "पेपर केहेन भेलौह दोस्त ?"— शेखर जिज्ञासा केलथिन्ह। "हम गंभीर गप्प करए एतए नहिं एलहुँ अछि। हम तऽ तोरा ओही दिन कहि देने रहियौह, एहि बेर फेर हम ई कॉलेज नहिं छोड़बौह। काजरक रेख तऽ तोहर देखले छौह। कोनो आर गप्प करऽह"— मनोजक उत्तर रहन्हि।

"मुदा तोरा चुनावकेर लोहा मानि लेलियौह मनोज! एहि सेशनक रंगीनी तऽ तोहीं चुनि लेलह। आब बाँचबे की केलैक कॉलेज मे ?"— अनिल बजलाह। "मुदा दोस्त, जकरा पाछाँ बताह भेल छऽह तकरो कोनो हाहि-परवाहि तोरा त्यागक छैक कि एकतरफे अन्हार मे हथोरिया दए रहल छऽह ?" —शेखर पुछलथिन्ह। शैलेन्द्र बिचहि मे बजलाह—"हमरा तऽ बुझल अछि जे अगिला जाड़ मे जयन्त कें अपना हाथक बुनल स्वेटर ओ प्रेजेंट कऽ रहल छैक। तोरो किछु वचन देलकौह अछि कि ओकरे टा ?"

"अन्हार मे हथोरिया देबाक आदति तऽ भरिसक मनोज कें नहिं छन्हि। आइ धरि एक टा कऽ-छऽ केने बिना ई कोनो काज कें नहिं छोड़लन्हि अछि। नहिं जानि आगाँक थारी छीनल जाइत देखि कए चुप कोना छथि।"—अनिल केर स्वर सुनैत-सुनैत मनोज बहुत गंभीर भए गेल छलाह। हुनका ओहि गंभीरताक डरें हुनकर मित्रोवर्ग हुनका सँ छाह कटैत रहैत छल। गोलका

टेबुल जेना मनोजेक संग मौन भए गेल छल आ' तखन शेखर पुछने छलथिन्ह—"साँचे-साँच कहऽ दोस्त, केहेन भेलौह पेपर ?" मनोज उत्तर-स्वरूप जेबी सँ मोसरल प्रश्न-पत्र बहार कऽ कए फेक देने छलथिन्ह । चाहक आखरी घोंट पीबिकए ओ ठाढ़ भए गेल छलाह ।

"मनोज, हमरा लोकनि तोरा खातिर जानो दए सकैत छियौह । कि हमरो लोकनि चलू ?"—शैलेन्द्र पुछलथिन्ह ।

"कोनो बातक फैसला आइ धरि हम एकसरे केलहुँ अछि । तोरा लोकनि बैसैत जाह ।"—अखंडित गंभीरता सँ मनोज बजलाह आ' कैंटीन सँ विदा भऽ गेलाह ।

दुर्गा-पूजाक छुट्टी हेबा मे दुइए चारि दिन रहि गेल छलैक । कॉलेज मे छात्रक संख्या क्रम-क्रम सँ घटए लागि गेल छलैक । कारण जे दू—चारि दिन पहिनहिं सँ छात्र लोकनि गाम दिस मुहरिया गेल छलाह । मनोजक साइकिल अपना स्वाभाविक गति सँ चलैत अशोक रेस्तराँ लग आबि कए ठाढ़ भए गेल छलैन्ह । तीन-चारि दिन सँ मेघ भोरे उमड़य आ फेर छँटि जाय किन्तु ओकर आयब-जायब लागले रहैक । कखनहुँ भरखर रौद नहिं भेलैक । बदरी तरक रौद कौखन कड़गर अवश्य लगैक किन्तु किछु-किछु हवा चलैत रहलाक कारणें उमस नहिं बुझि पड़ैक । अशोक रेस्तराँ कालेजक बाटहि पर छलैक तैं पंजाबी रिफ्यूजीक ई रेस्तराँ मनोज कें चिन्हैत छलैन्ह । रेस्तराँ मे पएर रखितहिं ओ 'चाय' बाजि देने छलाह आ' टेबुल पर राखल घंटी पर हाथ रखैत मनेजरो "एक चाय लाना" बाजि उठल छल । मनोज जेना अपने दुनिया मे डूबल छलाह ! आइ चारि तारीख भऽ गेल छलैक । गाम सँ एखन धरि टाका नहिं आयल छलैन्ह, किन्तु हुनका चिन्ताक विषय ओ नहिं रहैन्ह । "अगिला जाड़ मे रेखा जयन्त कें अपना हाथक बुनल स्वेटर प्रेजेंट करतैक" शैलेन्द्रक ई वाक्य हुनका मानस मे बेर-बेर आबि जाइत छलैन्ह —जयन्त ! पायजामा, कुरता आ' चप्पल पहिरयवला लड़का । ककरो सँ भरि मुँह गप्पो करबाक



हिम्मति छैक ओकरा ? ओ मिस रेखाक स्नेहक अधिकारी ? कथमपिनहि ।" गरम-गरम चाह मनोजक सोझाँ मे छलैन्ह । ओहि सँ भाफ उठि रहल छलैक । चाहक प्याली सँ ऐंचि कए बहराइत भाफ दिस मनोज किछु काल धरि तकैत रहलाह । ओहि मे सँ स्किनटाइट ड्रेस मे दुबरि-दानुरि गौरवर्णा रेखा जेना बहरा रहलि छलीह । हुनका कारी ओढ़नी केर एक गोट छोर तखुनके हवा मे जेना लहरा रहल छलन्हि । स्वाभाविक मुद्रा मे मुनल हुनका मुँह मे हुनकर पातर ठोर जेना आब हँसल-आब हँसल सन लगैत छलैन्ह । मनोज चाहक चुस्की-पर-चुस्की लैत उठैत भाफ दिस देखैत छलाह । चुस्की-पर-चुस्की लेलाक कारणें चाह केर मात्रा आ' भाफक मात्रा दुनू कम भए रहल छल । मनोज एक बेर सड़क पर दूर धरि नजरि दौड़ओलन्हि । मेघक छाँह घनगर सन बुझि पड़लैन्ह । तखनहिं कोनो कोन सँ जेना मन्द स्वरें मेघ कहलकैक—"एखन बरखा अवस्से हैत ।" मनोजक उताहुल आँखि किछु आर दूर दौड़ल चल गेलैन्ह । मेघक ओहि छाँह मे चल अबैत एक टा रिक्सा परक इजोत जेना ओ देखि लेलन्हि । प्यालीक बाँचल चाह दू-तीन घोंट भेलैन्ह । पाइ मनेजर कें बढ़ा देलथिन्ह । कैसमेमो आ' सोंफ कें टारि रेस्तराँ सँ बहरेलाह । कारी-कारी मेघ जेना आकाशक पाटी पोति नेने हो आ' ओहि पोतल पाटी पर पतलखरीक मोसि सँ रेखा खैंचैत मिस रेखाक रिक्सा सर्र दऽ मनोजक आगाँ दऽ कए चलि गेल होन्हि । हुनकर बामा हाथ साइकिलक हैंडिल पर आ' दहिना हाथ साइकिल मे लागल चाभी पर कोना गेलैन्ह कियो नहिं देखलकैक । ओ सड़क पर चल जा रहल छलाह ।

बरखा जेना बुन्दक घोड़ा कें फरदवाल हँकने अबैत छल कारण जे बड़का-बड़का बुन्दक धबधबी साफ श्रुतिगोचर होमय लागल छलैक । दसे बुन्द मे भिजवयवला ओ बरखा रिक्सा कें अगिला झमटगरहा गाछ तर ठाढ़ हेबा लेल बाध्य केलकैक आ' मनोजक साइकिल केर पाइडिल आगाँ घूमब छोड़ि पाछाँ घूमय लागल छलैन्ह । समीप आबि पैडिल पर सँ हुनकर पएर लटकि गेलैन्ह, जकर

लहजा फिल्मी रहैक। साइकिल सिसकारी दैत रिक्सा लग आबि कए ठाढ़ भेल। रिक्शावला अगिला गाछ तर किछुए दूर पर ठाढ़ छल। लटकल पएर मे सँ एकटा टेकि कए मनोज साइकिल सहित किछु टेढ़ सन ठाढ़ भए गेलाह।

मिस रेखा सहसा मनोज कें ओतए देखि किछु विचलित सन भेलीह, किन्तु फेर जेना दृढ़ता समेटि कए दोसर दिस ताकय लगलीह। मनोज बजलाह—"संयोगक बात, बरखो कें एखनहिं एबाक रहैक। अहाँ कें तऽ रोकबे केलक, अहीं लग हमरो रुकबा लेल बाध्य केलक। जखन रुकिए गेलहुँ अछि तऽ दुटप्पी गप्प अछि कइए ली। अहाँ जयन्त कें अगिला जाड़ लेल अपना हाथ सँ स्वेटर बुनिकए दऽ रहल छियन्हि। ई तऽ नीक काज हैत। बेचारा कें जाड़क कपड़ो नहिं छैक, किन्तु स्वेटर तऽ ओ कुरताक तऽरे मे पहिरत।"

मिस रेखाक गनती बहुत स्पष्टवादिनी लड़की सब मे होइत छलैन्ह। ओ बजलीह—"ई हमर व्यक्तिगत बात थीक मिस्टर मनोज, एहि मे दखल देबाक अधिकार शायद अहाँ कें नहि अछि, किन्तु हम अहाँ कें पुछैत छी रिक्साक पाछाँ साइकिल दौड़ायब कोन सभ्य तरीका थिकैक?" मनोज शांत भाव सँ कहलथिन्ह—"मिस रेखा, ई संयोगेक बात जे ई बरखा हमरा अहाँ सँ एहि गाछ तऽर मिला देलक, किन्तु हम अहाँ सँ भेंटो करए चाहैत रही। अहींक संग चलबा लेल हम पछआय गेलहुँ अछि। ई पूरको परीक्षा हमरा सफलताक परीक्षा नहिं थीक। हम फेर अहींक संग फाइनल परीक्षा देब। अहाँक काजरक रेखे हमरा तकदीरक रेख थीक, ई सब कें बुझल छैक। जयन्त कें सेहो अहाँ ई बुझा देबैक।"

एक क्षणक हेतु मिस रेखा फेर विचलित जकाँ लगलीह। किछु डेरायल सन भाव हुनका मुखमंडल पर अबैत सन लगलैन्ह, मुदा दोसरे क्षण ओ विलीन भए गेलैन्ह। ओ बहुत गंभीर भए बजलीह—"मनोज बाबू, कोइली जखन कुहुकैत छैक तऽ के जनैत छैक जे ओ कनैत छैक अथवा गीत गबैत छैक? अहूँ कें कोनो अभिभावके पढ़बैत हेताह। हमरो पिता जी हमरा पढ़बैत छथि। हमरे टा नहिं, हमरा सँ जेठ चारि बहिन कें बेटाक सिनेह आ' दुलार दऽ कए



पढ़ओलथिन्ह। हमहूँ बेटेवला सिनेह आ दुलार पबैत पढ़ि रहलहुँ अछि, सभक दृष्टि मे आगाँ बढ़ि रहलहुँ अछि। हमरा पिताजी कें रिटायर करबा मे आब तीनियें बरख रहि गेल छन्हि। हमरा सँ जेठ दू बहिन पढ़ब समाप्त कए लेलन्हि। हमरा निश्चित विश्वास अछि जे अहाँ एहेन सौभाग्यशाली नहिं हैब जे अहाँ कें बहिन नहि होथि। हमर मतलब ई अछि जे अहाँक बहिन अहाँ लेल समस्या नहि होथि। हमर दुर्भाग्य जे हम अपना कोनो भाइक समस्या नहि बनि सकलहुँ। ई कहैत-कहैत रेखाक आँखि डबडबा एलैन्ह। हुनकर बड़का-बड़का आँखि जेना उमड़ल नोरक प्रवाह मे हेलय लगलैन्ह। कोनों तरहें अपना कें नियंत्रित करैत ओ बजलीह—"हमर पिताजी जखन अपना मित्र सब कें कहैत छथिन्ह—"हमरा दृष्टि मे बेटी-बेटा मे कोनो फरक नहिं। हम बेटियो सब कें बेटे जकाँ पढ़ओलहुँ अछि"—तऽ हमरा सँ जेठ दू बहिनिक निरुद्देश्य वर्तमान साकार भऽ कए जेना हमरा कहैत अछि—"ई युग युवकक नहिं थिकैक। ई कुंठाक युग थिकैक। हमर काजरक रेख जखन खैंचल रहैत अछि तऽ अहाँ आह्लादित होइत छी, आकर्षण अनुभव करैत छी, किन्तु ओकरा मेटेबाक पृष्ठ-भूमि मे हमरा प्रौढ़ पिताजीक बेबसी, हमरा जेठ बहिन सभक निराशा-प्रसूत अश्रु-प्रवाह रहैत छैक। ई रेखा ककरो तकदीरक रेखा होइक, ओहि सँ पूर्व ककरो तीन बेर सोचय पड़तैक। खैंचल रेखा देखि कए तकदीर बनवयवला कें युग बदलवा लेल तैयार होमय पड़तैक। ई रेखा हास सँ खैंचल जाइत छैक आ' अश्रु सँ मेटाइत छैक। हमरा कोनो भाइ नहिं छथि। जयन्त दूरक संबंधें हमर भाइ होइत छथि से विशेष अर्थ नहिं रखैत छैक। हुनका सँ जे आतुर भेटल अछि से अलभ्य छैक। अहाँ कें हम अंत मे कहैत छी जे अहाँक नीयत मे खोट अछि। अहाँ बहुत दुर्बल छी। अहाँ अपना प्रति ईमानदार नहिं छी। वर्तमान केर उपेक्षा करएवला अकर्मण्य व्यक्ति अपन तकदीर बनवय अथवा बिगाड़य हमरा तकदीरक ठीकेदार नहिं भए सकैत अछि। भावावेश मे एतेक बात तऽ रेखा बाजि गेलीह, किन्तु सहसा हुनकर सगरे देह एक बेर काँपि गेलैन्ह। ओ भयभीत जकाँ एक बेर मनोज दिस देखलथिन्ह। मनोजक मुड़ी नीचाँ भए गेल छलैन्ह। बरखाक वेग थम्हि गेल छलैक। रिक्सावला एहि

गाछ तऽर आबि गेल छल। रेखा ओकरा कहलथिन्ह—"लऽ चलऽ रिक्सा"। मनोजक सोझाँ मे काजरक रेखा अश्रु-प्रवाह सँ मेटायल छलैन्ह। ओ मुड़ी उठाकए सून दृष्टि सँ रिक्सा बढ़ैत देखय लगलाह। बुझि पड़लैन्ह जेना बड़ी दूरक यात्रा पर हुलसित भऽ कए चलल होथि, किन्तु बटखरचावला मोटरिये हेरा गेल होन्हि।



# आँजुर भरि नोर

"भोनू भाव ने जानय पेट भरन सों काम—कोनो बेजाय कहैत छैक ! बुड़िबक गैलाह भाटाबाड़ी तऽ कहलथिन्ह जे वृन्दावन इएह थिकैक। डेली-खुभी नेने आइ शिमला, काल्हि दार्जिलिंग आ' परसू नैनीताल केला सँ की सिझतैन्ह-पकतैन्ह से नहि जानि। दुनिया सँ कोनो संपर्क सम्बन्ध नहि। एक टा बेटा हमरे छथि कि एक टा बेटी ओही बेचारा ब्राह्मण कें छथिन्ह। हिनकर तऽ अकासे मे धोती सुखाइत छन्हि, ओमहर ओहो, नहि जानि, कोन जन्मक कर्ज हिनकर धारने छलथिन्ह जे माय-बाप, संग-समाज सब कें लात मारि हिनका लेल अजबारलि बैसलि रहए चाहैत छथि। सपूत होअए तख-नहि बेटा। जकरा लोक-वेद, संग-समाज, नीक-अधलाह बुझबाक अवगति नहि होइक ओहेन बेटा सँ तऽ भगवान बिन बेटेक रखितथि सएह नीक"—मध्याह्नक भोजन कए कौशल बाबू आँगन मे ऐंठार पर बैसल खरिका करैत बजलाह। "अहाँ तऽ सदिखन बौआक जड़िये लागल रहैत छियैक। एतबैक अहाँ कें हरदम मुँह मे रहैत अछि जे एहेन बेटा सँ बिनु बेटेक रहितहुँ सएह नीक। हमर बेटा ककरो हाथ रोकने छैक? कऽ लियऽ गऽने अपना

बेटीक बियाह ओ आन ठाम ! हमर बेटा बिन बियाहले रहत। ओकरा हम सट्टा तऽ नहि लिख देलियैक अछि ! हमरा पुतहुक सौख नहिं अछि। भगवान एकर जिनगी रखथुन्ह सएह बहुत।"—पत्नी हुनकर बात कटैत उत्तर देलथिन्ह। कौशलबाबू किंचित आवेश कें दबबैत बजलाह—"जकरा कपार पर बेटी रहैत छैक ओकर दुःख अहाँ की बुझबैक ? ओ बेचारा की करतैक, धर्म-संकट मे पड़ल अछि। ई आँगुर कटैत अछि तइयो अपने घाव ओ आँगुर कटैत अछि तैयो अपने घाव। आसक डोरि पकड़ि कए तऽ लोक जिनगी खेपैत अछि। अपराध हमर छल जे हम लालबाबू सँ खूनक सम्बन्ध जोड़बाक आकांक्षा कएल। ओ पूरा होअए सएह तऽ ओकरा अभीष्ट छलैक। किन्तु, हम करितहुँ कि ? निर्लज्ज भऽ कए कहए पड़ल जे हमर बेटा हमरा हाथ सँ बहार भए गेल, अहाँ दोसर कुटुम कऽ लियऽ। बेचाराक आँखि मे नोर डबडबा एलैक। हिनके टारा मे तेल जरैत होन्हि से बात नहिं छैक। लालबाबू कें एक-सँ-एक कथा भेटतैक, किन्तु ओ तऽ लाचार छथि नहिं तऽ....।"

कौशलबाबूक घरे टा खानदानी नहिं छलैन्ह अपना बुद्धि-विचारक कारणेँ ओ समाज मे प्रतिष्ठा सेहो प्राप्त केने छलाह। एकमात्र संतान नरेन्द्र पर दम्पतिक आशा-आकांक्षा तऽ अवलंबित रहबे करन्हि, संपत्तिक उत्तराधिकारीक रूप मे कुल केर भविष्यक आधार सेहो उएह रहथिन्ह। मायक मोह आ बापक सिनेह केर दुहू कोष्ठक मे जहिया सँ नरेन्द्र चेठनगर भेलाह, पिताक महत्वाकांक्षा, जे हमर नरेन्द्र उच्च शिक्षा प्राप्त करथि, सत्कर्म आ' सद्विचार सँ कुल कें उजागर करथि तथा मायक कामना, जे नरेन्द्र जीवथि आ' जीवनक सुख-सुविधा केर बेसी-सँ-बेसी उपभोग कए आनन्द सँ रहथि, हुनका संग लागल हाइ इस्कूल धरि गेलैन्ह। मेधावी तऽ रहबे करथि, मोन सँ पढ़बो केलैन्ह आ' हाइ इस्कूलक परीक्षाफल सँ पिता केर भविष्यक स्वप्न कें मोहक बना कए कालेज मे भरती भेलाह। नहिं जानि कोना संस्कार-रूप



चित्रकलाक अभिरुचि कॉलेज मे जगलन्हि आ' ओ तेना कए अपना दिस आकर्षित केलकैन्ह जे ओही पाछाँ बेसी समय बितबय लगलाह। प्रकृति-नटी आकर्षक परिधान मे आबि हुनका आत्मा मे नव-नव सौन्दर्य-चेतनाक संचार करए लगैन्ह आर ओहि अनुराग-अम्बुधि मे आकंठ-मग्न नरेन्द्र सब सुधि बिसरि जाथि।

कॉलेज, किताब तथा परीक्षाक सीमित क्षेत्र नहि, संपूर्ण प्राकृतिक परिवेशे नरेन्द्रक घर-आँगन भऽ गेलैन्ह। परीक्षाक अवहेला बी० ए०क परीक्षाफल नीक नहिं होमय देलकैन्ह। कौशलबाबू क्षुब्ध भेलाह किन्तु पत्नीक आग्रह देखि अपना डगमगाइतो विश्वास कें आगाँ बढ़ए लेल लगाम ढील कऽ देलथिन्ह। फलस्वरूप नरेन्द्र अर्थशास्त्र मे एम० ए० पढ़ए लेल यूनिवर्सिटी पठाओल गेलाह। पिजड़ा सँ कोनो विधि छुटि जे पक्षी एक बेर मुक्त आकाश मे बिचरि लैत अछि, ओकरा पिजड़ाक घेरा किन्नहु स्वीकार भए सकैत छैक ? नरेन्द्र वर्ग मे जाथि, अध्यापकक व्याख्यान सुनथि, किन्तु मोन टाँगल रहैन्ह कतहु पर्वत-प्रदेश केर प्राकृतिक प्रांगण पर। उद्विग्न भऽ जाथि। जखनहिं अवकाश होन्हि पड़ाथि कॉलेज सँ। कहियो शिमला, कहियो दार्जिलिंग, कहियो कतहु, कहियो कतहु। माय तऽ नरेन्द्र कें माफे केने रहथिन्ह, पितो मौने रहितथि जँ अपना परम आत्मीय लालबाबू कें अपनहिं दिस सँ नहिं कहने रहितथिन्ह जे हमरा लोकनिक ई मैत्री खूनक संबंध मे परिणत हेबाक चाही। अहाँ कें एकेटा पुत्री छथि आ' हमरा एकेटा बेटा। आ' तखन दुनू मित्र परस्पर प्रतिश्रुत नहिं भेल रहितथि। एहू सँ आगाँ ई भेलैक जे कौशलबाबू पत्नी तक कें ई बात नहिं कहलथिन्ह, किन्तु लालबाबू पत्नियें लग ई बात बाजल रहथि। सुलेखाक जन्मक बाद लालबाबू कें एको संतान जीवित नहिं बचलैन्ह। तैं संपूर्ण सिनेह आ' दुलारक केन्द्र सुलेखे रहलीह। हाइ इस्कूलक परीक्षा तऽ साधारणतः पास करबे करितथि, निश्चिन्तता सँ लालबाबू हुनका कालेजक शिक्षा देबा मे तत्पर भेलाह। सुलेखा जेहने देखबा-सुनबा मे छलीह तेहने लिखबा-पढ़बा मे। दायित्व-बोध ततेक हुनका रहन्हि जे कॉलेज बन्द होइतहिं माय-बापक सेवा मे गाम चल आबथि। एके-आधेटा अंतरंग सहपाठिनी हुनका

रहन्हि तकरो सँ कखनहुँ काल वितृष्णे भऽ जान्हि तऽ ओ केवाड़ भितरी सँ बन्द कऽ कए एकसरे कोठली मे बैसि जाथि।

बी० ए०क परीक्षा दऽ कए नरेन्द्र गाम आयल रहथि। कौशलबाबू हुनका सोद्देश्य लालबाबूक ओतए पठओलथिन्ह। मध्याह्नक भोजन पर नरेन्द्र बैसल रहथि। सुलेखाक माय पंखा हौंकैत रहथिन्ह। मुंह फोड़ि कए पहिले बेर ओ नरेन्द्र कें पुछलथिन्ह—"अहाँ बियाह-दान कहिया करबैक बाबू ?" नरेन्द्र कें जेना झटका सँ कियो किछु अरुचिकर मोन पारि देने होन्हि तथापि आन्तरिक अरुचि कें उपर नहि आनि हँसिकए कहलथिन्ह—"कहाँ किछु सोचलियैक अछि काकी ! ई बात हमरा सोचबाक तऽ नहि थिकैक ?" सुलेखाक माय मौन रहि गेलीह। मोन मे आशंका उमड़य-घुमड़य लगलैन्ह। हुनका सँ बेसी चिन्तित नरेन्द्र स्वयं भेलाह। ओतए औपचारिकताक निर्वाह कए गाम पर एलाह। माय कें स्पष्ट कहि देलथिन्ह—"माय, हमरा विवाहक गप्प कतहु नहि करबा लए बाबूजी कें कहि दिहौंन्ह।" आर ओही दिन साँझुक गाड़ी सँ ओ दार्जिलिंग विदा भए गेलाह। कौशलबाबू जखन नरेन्द्रक विवाह लालबाबूक कन्या सँ करवाक अपन अभिमत पत्नी लग प्रकट केलैन्ह तऽ सहसा पत्नीक मुँह सँ बहरा गेलैन्ह—"मगर बौआ तऽ हमरा कहि गेल अछि जे हमरा विवाहक गप्प बाबूजी कें कतहु ने करए कहिहौंन्ह।" कौशलबाबू सहसा सरोष पुछलथिन्ह—"की मतलब ? ओ अपनहि मोने विवाह करए चाहैत अछि कि ?" पत्नी स्थिति सम्हारबाक उद्देश्यें कहलथिन्ह—"एखन विवाह नहि करए से ओकर मोन छैक।" कौशलबाबू कें तखन बोध भेलैन्ह जे मोनक बात गुप्त राखि कए अथवा भावावेश मे लालबाबू कें निश्चिन्त कऽ कए ओ अपराध कए गेल छलाह। हुनका भितरी सँ कचोट भेलैन्ह। मोन मे एलैन्ह जे एखनहि लालबाबू कें जा कए कहि दियन्हि जे अनजान मे हमरा सँ ई अपराध भए गेल। आब अहाँ अपना पुत्रीक विवाह अन्यत्र कए दियौन्ह। किन्तु, किछ सोचि कए ओ चुप रहि गेलाह। नरेन्द्रक बी० ए० केर परीक्षाफल जखन



हुनका क्षुब्ध केलकैन्ह तऽ एक दिन हँसितहि-हँसतहि ओ लालबाबू कें कहलथिन्ह—"आइ-काल्हिक धिया-पुताक कोन भरोस ? कियैक ने हमरा लोकनि सुलेखाक हेतु दोसर नीक घर-वर ताकी ?" लालबाबूक आँखि डबडबा एलैन्ह। ओ कहलथिन्ह—"दोस्त, बात हमरे हाथक रहइत तऽ किछु नहि रहैक। अहाँ अभिन्न छी तें कहैत छी। सुलेखाक माय हमरा कहलैन्ह जे सुलेखाक विवाह अन्यत्र नहि होमक चाही। हमरा सँ बड्ड पैघ गलती भेल जे हम एकरा गुप्त नहि रखलहुँ।

करीब चारि बजे नरेन्द्र यूनिवर्सिटी सँ डेरा आपस एलाह। कोठलीक ताला खोलैत रहथि कि एक गोट रिक्सा डेराक सोझाँ आबि कए ठाढ़ भेलैन्ह। ओहि पर सँ सुलेखा उतरलीह। नरेन्द्र किंचित उत्सुकता सँ मुस्कुरा कए पुछलथिन्ह—"सुलेखा, अहाँ ?" सुलेखा कहलथिन्ह—"हँ, अहीं सँ किछु काज अछि, कोठली खोलू।" नरेन्द्र कोठली खोलैत बजलाह—"कोठली तऽ खोलितहि छी। अहाँ ओतहि कियैक ठाढ़ि छी, भितरी आउ ?" सुलेखा रिक्सा लग सँ नहूँ-नहूँ चलि कए कोठली मे एलीह। नरेन्द्र कहलथिन्ह—"एहि बेरुका अपना दार्जिलिंग-यात्रा मे जे चित्र हम बनओलहुँ से तऽ अहाँ देखलियैक अछि ?" "नहि तऽ"—सुलेखा बजलीह।

नरेन्द्र बाकस खोलि कए चित्र बहार करए लगलाह आ' सुलेखा गंभीर भेलि बैसलि रहलीह। नरेन्द्र कहए लगलथिन्ह—"सरिपों प्रकृति सँ बेसी प्रिय हमरा किछु नहि अछि। की कहू, एहि बेर जे दार्जिलिंग जाइत रही, हमरा किछु-किछु ओहि अलौकिक सौन्दर्यक अनुभूति जकाँ भेल, जकरा हेतु हमर मोन, नहि जानि, कहिया सँ, आ' कतबा पियासल अछि। साँचे कहैत छी जे मनुक्ख आ' इतर प्रकृति जेना एक-पर-एक चित्रमय पृष्ठ जकाँ हमरा सोझाँ मे उनटल जा रहल होअए। किन्तु, आर साँचे कही तऽ सबटा सुन्दर हमरो सुन्दर लगितहुँ जेना ओ नहि होअए जे हमर थिक, हमरा किछु तेहने लगैत अछि। जेना ओ सुन्दरता हमरा नजरिक डरें पड़ायल फिरैत होअए आ' हम ओकरा पाछाँ बदहवास

दौड़ल जा रहल होइ। हँ, तऽ कनियें-मनियें जे सौन्दर्य-बोध हमरा भेल, तकरे अनुकृति हमर ई चित्र अछि, देखू। ई कहि नरेन्द्र सुलेखाक सोझाँमे चित्र राखि देलथिन्ह। अपूर्व प्राकृतिक दृश्य छलैक। पर्वत-प्रदेश केर कुहेस लागल सन वातावरण मे चंद्र-ज्योत्स्ना जेना पिछरि-पिछरि कए धरती पर पड़ैत रहैक। पर्वत-शृंग केर कात मे मुस्कुराइत चंद्रमा जेना मुस्कुराइत कुहेसक मध्य ओस सँ अवनत पात-पात कें अपना स्निग्ध दृष्टि सँ पुलकित कए रहल छलैक। सोताक किनार मे उजरा पाथरक पैघ सन टुकड़ा पर एक टा युवक वंशी बजा रहल छल। सुलेखा किछ काल धरि एकाग्रता सँ ओहि चित्र कें देखैत रहलीह, कहलथिन्ह—"चित्र सरिपों उत्तम अछि।" "बस एतबैक? अहाँ सँ एतबैक केर उमेद नहिं केने रही सुलेखा!"—नरेन्द्र बजलाह। सुलेखा गंभीरतापूर्वक उत्तर देलथिन्ह—"अहाँ चित्रकार छी। कलाकेर उपासकक मानस मे भावनाक स्रोत उमड़ैत रहैत छन्हि। भावना तऽ सब कें छैक, किन्तु ओकर तीव्र अनुभूति प्राप्त करब आ' तकरा अभिव्यक्ति देब सभसँ नहिं भए सकैत छैक। अहाँक तूलिका भाव कें चित्रित करबा लेल उताहुल रहैत अछि, किन्तु हम तऽ अत्यंत साधारण कोटिक व्यक्तियो छी आ' एखुनका मनुष्य-समुदाय मे कन्या भऽ कए जन्म लऽ कए जिबैत छी। ओहि मनुष्य-समुदाय मे, जकरा सँ प्रकृति केर वैभव-विलास तऽ बड़ी दूर छुटिये जाइत छैक, भरिसक हँसी आ' आह्लाद सँ बेसी नोरे ओकरा हिस्सा मे पड़ैत छैक। हम अहाँ सँ किछु गप्प करए आयल रही।"

नरेन्द्र बजलाह—"सुलेखा, हमरा ई ज्ञात अछि जे अहाँ सौन्दर्यक अलभ्य संसार सँ हमरा घीचि कए वज्र-कठोर धरती पर पटकि देबय चाहैत छी। किन्तु, ओ संसारे हमर सर्वस्व थीक सुलेखा। एक व्यक्ति दोसर व्यक्तिक सुख छिनबा लेल षड्यंत्र करितहिं छैक। हमर पिता आ' अहाँक पिता दुहू गोटए मिलि कए एक गोट जाल रचलन्हि अछि। हम ओहि मोह-जाल सँ सचेत छी। जालक मोहकता हमरा आविष्ट नहिं करत। हम फराके रहब। ओ लोकनि मुँह भरें खसइ जेताह।

सुलेखाक गंभीरता पूर्ववत् रहलन्हि। किंचित आवेशक रक्तिम आभा एक क्षणक हेतु हुनका मुख पर एलैन्ह। ओ बजलीह—"चित्रकार, अहाँ मे अहंकार



अछि। बहुत इजोत अहाँ सहसा देखि लेलियैक अछि। इजोतक अर्थ लगायब अहाँक सामर्थ्यक बात नहिं। हमर पिताजी कोनो जाल नहिं रचलन्हि अछि, षड्यंत्र नहिं केलैन्ह अछि। ओ दुर्बल छथि, कारण जे हमरा सन अबला हुनका कपार पर छन्हि।

नरेन्द्र अविचलित भाव सँ कहलथिन्ह—"अबला कें जँ ई बोध होइक जे ओ अबला अछि तऽ किन्नहुँ ओ अबला रहत? अबला अहाँ अहू कारणें छी जे हमरा पएर मे छान नहिं पड़ल अछि। अनंत केर मुक्त विहग जकाँ सौन्दर्याकाश मे पाँखि पसारि हम स्वच्छन्द विचरण कए रहल छी। अहाँक विशेषता हमरा अपना मार्ग सँ डिगा नहिं सकत। अहाँ सुशिक्षिता छी, पराधीना नहिं छी, स्वावलंबिनी भऽ सकैत छी। हमर शुभकामना अछि।" सुलेखा कहलथिन्ह—"नरेन्द्रजी, हम अपना कें अबला कहलहुँ अछि, पराधीना नहिं। हमर विशेषता अपन स्वतंत्रते मात्र अछि, जे जन्महिं सँ हमरा कोन, सबकें प्राप्त रहैत छैक। आ' हमरा ओकर रक्षो करए अबैत अछि। हम ककरो पर बोझ बनए नहिं चाहैत छियैक। हम अपन स्वाभिमान छोड़ि कए अहाँ कें अपन बात कहए एलहुँ अछि। अहाँ हमरा माय कें हँसि कए जे उत्तर देने रहियन्हि से हम सुनने रही।

नरेन्द्र किछु उत्तेजित भए कहलथिन्ह—"सुलेखा, हमर ओ घरे नहिं थीक, जतए अहाँ आयब। पहाड़ आ' जंगल-झाड़ में काँट-कुश पर चलि कए जे व्यक्ति सुन्दरताक टोहि लगबय चाहैत अछि ओकरा संग अहाँ कतबा दूर चलब? अहाँ तऽ अपनहुँ बैसि जायब आ' हमरो बैसा लेब।"

सुलेखाक ठोर पर सहज स्मितिक रेखा स्पष्ट भेलैन्ह। ओ कहलथिन्ह—"तूरक फाहा पर जाहि शिशु केर पालन होइत छैक, खधरो ओकरा देह मे खोंच लगबैत छैक। काँट सँ अहाँ कें सरिपों भेंट भऽ जाय तऽ पड़ेबाक बाट नहिं भेटत। अहाँ हमरा नजरि मे दयनीय भेल जाइत छी, चित्रकार। हमरा अपन बात कहए दियऽ।"

नरेन्द्र खूब जोर सँ हँसलाह। कहलथिन्ह—"कहू-कहू, अहाँ की कहब, से हमरा बुझले अछि।

सुलेखा आवेश कें किंचित् दबेबाक चेष्टा केलैन्ह तथापि मुखमंडल आरक्त भए गेलैन्ह। ओ कहलथिन्ह—"देवता पर अर्पित हेबा लेल जे फूल तोड़ल जाइत छैक ओकरा मरणों मे एक प्रकारक जीवन रहैत छैक। किन्तु, ओहि मरणक कल्पना करू जे ओहि फूल कें पाथर पर मुड़ी पटकि कए मरए पड़तैक आ' तखन ओ निर्माल्य बनत। अहाँ कें देवता बुझि हम स्वेच्छा सँ उत्सर्ग भेलहुँ, किन्तु आइ पाथर पर मुड़ी पटकि कए निर्माल्य बनलहुँ अछि। अस्तित्व तऽ ओही दिन मेटा गेल रहए जहिया उत्सर्ग भेल रही, किन्तु अहाँ सँ जीवन पैंच लऽ कए जीवित रहबाक स्वप्न देखैत रही। अहाँ सँ जीवन भेटबाक कल्पने हमरा नवजीवनक स्रोत रहए। आब पाथर पर मुड़ी पटकि-पटकि कए हम अश्रु संचित करए जाइत छी। जहिया अहाँ घर आयब आँजुर भरि उएह नोर अहाँक चरण मे अर्पित करब, इएह कहए हम आयल रही।"

ई कहि सुलेखा उठि गेलीह। नरेन्द्र सुलेखे संगें उठि कए ठाढ़ भेलाह, किन्तु फेर थकथका कए जेना बैसि गेलाह...... !



# काँच निन्न टुटैत स्वप्न

नवल आखरी पेज केर प्रूफ देखलन्हि, पेज सब सरिया कए टेबुल पर राखि पेपरवेट सँ दाबि देलथिन्ह आ' पंखा बन्द कऽ कए कोठली सँ बहार भेलाह। सीढ़ीक दोगाठी मे राखल अपना पुरनका साइकिल दिस जहिना बढ़लाह कि सीढ़ीक बल्ला कुरताक जेबी मे लागि गेलैन्ह आ' चर्र दऽ जेबी फाटि गेलैन्ह। ठाढ़ भऽ कए फाटल जेबी कें देखलन्हि—"कोन कुसाइत मे आइ डेरा सँ चललहुँ से नहि जानि, नऽबे कुरता फाटि गेल"—बुदबुदेलाह। खोलबा लेल साइकिलक ताला जहिना हाथ मे लेलन्हि कि ओहि मे लागल मोटका जिजिर झरझरा उठलैक। फाटक पर औंघाइत बुढ़बा नेपाली दरबान अपन झुर्रीवला मुँह उठा कड़कि कए बाजल—"कौन है ?" नवल अपेक्षाकृत कम जोर सँ कहलथिन्ह—"हम हैं भाई, साइकिल ले रहे हैं।"—"अच्छा बाबू, कोई बात नहीं"—कहि कए ओ कनेक कऽज भऽ कए औंघाय लागल। नवल मोटका जिजिर कें सीटक निचाँ मे दू भत्ता दए ताला लगओलन्हि आ' साइकिल उठा ओसाराक सीढ़ी सँ उतरलाह। साइकिल टघरा कए फाटक सँ बहरेलाह तऽ दरबानक माथ औंघेबाक कारणें ठक दऽ फाटकक छड़ मे लगलैक। ओ कनेक

सुगबुगायल आ' फेर दोसर दिस झुकि कए ओंघाय लागल। नवल पएर उठा कए एके बेर साइकिल पर चढ़ि गेलाह। पैडिल देलथिन्ह तऽ सहजहिं ओ दुहू दिस घुमि गेलैन्ह, किन्तु दू-चारि बेर घुमओला सँ धऽ लेलकन्हि आ' साइकिल कड़कड़ाइत आगाँ बढ़लन्हि।

मिट्ठूक चाह-पानक दोकान। नवल एहि दोकान दिस तेना तकलन्हि जेना बैलगाड़ी मे जोतल रौद मे चलैत पियासल बरद आगाँक पनिबट कें देखैत अछि आ' ओतए अबितहिं जुआक चिन्ता छोड़ि गरदनि लिबा दैत अछि। मिट्ठूक दोकान नवलक हेतु ओही पनिबट जकाँ छलैन्ह। सगरे पटना मे मिट्ठुए टा नवल कें चिन्हैत छलैन्ह। आर सब अनचिनहारे लगैत रहैन्ह। चिन्हलो लोक कखन बेचिनहल भए जेतैन्ह तकर हिनका ठेकाने नहि बुझि पड़ैन्ह। कल्हुके कि परसुके तऽ बात थिकैक, हिनकर एक टा दोस्त, ओहो नोकरिये ताकय पटना आयल रहए, होटल मे चाह पिबैत रहए, नवल दिस तेना तकलकन्हि जेना ओ हिनका कहियो देखनहुँ ने होन्हि। ई तऽ ओकरा चिन्हतहि रहथिन्ह मुदा टोकबाक हिम्मति नहि भेलैन्ह। भरिसक नीक सिपारिस ओकरा लागि गेलैक। जरूर कोनो सरकारी आफिस मे काज करैत अछि। नवल दीर्घ निःश्वास लेलैन्ह। इहो तऽ ओही लेल ओतबा धौजनि सहलैन्ह! हिनकर भूतकाल जेना भूत भऽ कए हिनका सोझाँ ठाढ़ भए गेलैन्ह। अपना भूतकाल सँ नवल कें ओहिना डर होइत छन्हि जेना नेना-भुटका कें भूत-प्रेत सँ, आ', नहि जानि कियैक, मिट्ठूक दोकान पर अबितहिं हिनका सोझाँ अपन भूतकाल ठाढ़ भइए जाइत छन्हि। मिट्ठू लग आबि हिनका लगैत छन्हि जेना कोनो परम आत्मीय लग आबि गेल होथि, जकरा अपन सबटा दुःख-सुख बेकहने रहले ने होन्हि। किन्तु, ओकरा ई किछु कि कहि पबैत छथिन्ह? मुँह सँ एतबैक बहराइत छन्हि—"की हौ मिट्ठू, चाह पियेबऽह?" मिट्ठू हिनका आगाँ जलखइ राखि दैत छन्हि।—"जलखइ करबाक मोन तऽ नहि छल हओ।"—ई कहैत छथिन्ह तऽ ओकर उत्तर होइत छैक—"छुछ चाहो लोक



पिबैत अछि? एखनहिं कचौड़ी उतरलैक अछि। तरकारी केहेन भेल? जिलेबी लेब, गरमे छैक?" ई 'नहि-नहि' करितहिं रहैत छथि, मिट्ठू हिनका आगाँ मे जिलेबी सेहो राखि दैत छन्हि। एक दिन ई कहबो केलथिन्ह—"जँ हमरा संग मे पाइ नहि रहितैह तऽ ई सबटा जे हमरा दऽ देलह अछि, हम पाइ कतए सँ दितियौह?" मिट्ठू किछु गंभीर भऽ कए कहने छलैन्ह—"सबटा काज लोक पइसेक खातिर नहि करैत अछि।" आ' ओहि दिन नवल कहैत रहि गेलथिन्ह ओ पाइ नहियें लेलकैन्ह।

"आइ बड्ड देरी भऽ गेल नवलबाबू?"—मिट्ठू पुछलकैन्ह आ' पानवला कठघराक कंगनी पर बैसि कए पान हाथ मे लेलक—"की कहियौह, आइ दू-तीन गोटए छुट्टी लऽ लेलकैक। मनेजर साहेब हमरा बजा कए कहलैन्ह—'सब काम खतम कर लीजिए।' नोकरीवला बात, की करितहुँ? प्राइभेट काज कोनो काज होइत छैक हओ? दुइए बजे दिन सँ हम ड्यूटी पर छी। आठे बजे फुरसति भऽ गेल रहितैह, से एगारह बजैत छैक, किन्तु कएल की जाय?"—नवल दुःखित स्वरें कहलथिन्ह —आ' मिट्ठू पान लगायब छोड़ि चुलहा लग चल गेल। चाहक केतली चढ़ा देलकैक। नवलक सोझाँ मे फेर भूत ठाढ़ भऽ गेलैन्ह।

अपना विधवा मायक एकमात्र संतान नवल मैट्रिक पास कऽ कए धनंजय-बाबूक संग लागल पटना एलाह, तकरा आब दू बरख भए गेलैक। धनंजयबाबू नवलक माय कें कहने छलथिन्ह—"आइ-काल्हि बिना सिपारिस के कतहु नोकरी होइत छैक? हमरा बहुत गोटए जनैत अछि। संग लगा दियौक कोनो सरकारी नोकरी दिया देबैक।" धनंजयबाबू कें परोपट्टा मे लोक पैघ आदमी बुझैत छलैन्ह। एबाक काल नवलक माय कलपि कए कहने छलथिन्ह—"बाबू, अहाँ कें की कहू, अहाँ की नहि जनैत छियैक! एकरे लऽ कए हमर उदय-परलय छैक। एक टा तुतनी छैक। जी-बचि जेतैक तऽ अहीं सभक

भए कऽ रहत ।" आ' धनंजयबाबू साधारण स्त्ररें कहने छलथिन्ह—"कहलहुँ तऽ संग लगा दियौक, कोनो-ने-कोनो काज धरा देबैक ।" नवलक माय कहने रहथिन्ह—"हँ बाबू, संग लगा दैत छियैक । दू आखर चिट्ठी लिख कए पठबैत रहए कहबैक । हमर मोन ओकरहि पर टाँगल रहत ।" ई कहैत-कहैत हुनकर आँखि डबडबा आयल छलैन्ह । धनंजयबाबू हुनका लग सँ तटस्थ भावें उठि गेल छलाह । हँ-नहिं किछु नहिं कहने छलथिन्ह ।

केतली मे पानि खधकय लागल छलैक । ओकरा उतारि कए चाहक पत्ती दए मिट्टू फेर ओकरा चढ़ा देलकैक आ' पुछलकैन्ह—"गामो दिस जायब ?" नवल कें कियो जेना बड़ी जोर सँ चाबुक मारि देने होन्हि, किन्तु इस-इसो करब मना होइक । ओ मौने रहलाह । माथ मे जेना भूत दौड़ए लागि गेलन्ह ।

—धनंजयबाबूक संग लागल ई पहलेजाघाट एलाह । जहाज पर सामान लए जेबा लेल धनंजयबाबू कुली नहिं केलैन्ह । नवल कें कहलथिन्ह—"कुली सब डेढ़-डेढ़ टाका मँगैत छैक । जहाज फुजबा मे एखन देरी छैक । गोटा-गोटी सामान जहाज पर धऽ आ ।" नवल एक गोट बड़का बाकस उठा कए कनहा पर लेलन्हि । बड़ भारी लागन्हि, किन्तु माथ पर नहिं उठओलन्हि । आ' धनंजयबाबू अपना दू बरखक बेटी कें आँगुर धरा पाछाँ-पाछाँ जहाज पर चल गेलाह । पत्नी एतए बाँकी सब सामान लग रहि गेलथिन्ह । जखन तीन खेप नवल धए एलाह तखनहुँ एक गोट चमड़ावला बाकस बचले छलैक । ओहो बाकस लऽ कए चलला पर धनंजयबाबूक पत्नी पाछाँ सँ चललथिन्ह आ' अपना हाथक बेंतवला टोकरी सेहो हिनके धरा देलथिन्ह । उएह नोकरी जे हिनका ओतए लगलैन्ह से रौद, बसात, पानि, बिहारिक असरि सँ मुक्त बीतल दू बरख धरि ई करैत रहलाह । मोन होन्हि जे छोड़ि कए पड़ा जाइ, किन्तु पटना एबाक काल केर मायक बात मोन पड़ि जान्हि—"बौआ, दम साधि कए रहब । तपेसियाक फल नीके होइत छैक ।"



चाह बना कए मिट्टू नेने एलैन्ह । पुछलकैन्ह—"आइ अहाँ किछु बेसी उदास लगैत छी ?" नवल कें भेलैन्ह जे ठोहि छोड़ि कए कानय लागी । कोनहुना नोर कें सम्हारि मिट्टूक हाथ सँ प्याली लेलैन्ह आ' एक घोंट पीलन्हि तऽ नोर रुकलैन्ह । प्यालीक चाह जल्दी-जल्दी सठा, पान लेलन्हि आ' पाइ देलथिन्ह । साइकिल टघरा कए फेर पैडिल घुमओलन्हि । पैडिल धेलकैन्ह तऽ बैसि कए विदा भेलाह ।

नवल कें धनंजयबाबू जवाब दए देने रहथिन्ह । कारण, जे ई एक दिन हुनका कहलथिन्ह—"हम एहिना रहबैक ? एहि सँ तऽ नीक छल जे गामे मे छलहुँ ।" ई बात हुनका लागि गेलैन्ह । ओ कहलथिन्ह—"पटना आबि कए आब तोरा पाँखि लागि गेलौह ? तोहर हम ठीका लेलियौक अछि ? उपरे मे अल्हुआ नहि फरैत छैक ।" आँगन सँ उग्र स्वरें हुनकर पत्नी सेहो कहलथिन्ह— 'खाली चारि सेर कए गीरय लेल । एक टा काज करए लेल कहियौक कि घुघुन लटकि जाइत छैक । जाह अपना घर ।" आ' नवल कें ओही दिन सँ चिन्हलो लोक अनचिनहार लागय लगलैन्ह । ओहि दिन चारू दिस कोनो चिनहा-परिचयवला लोक कें नवल ताकि एलाह, कियो नहि भेटलैन्ह । सोझाँ मे मिट्टूक दोकान देखि ओतए बैसि गेलाह तऽ लागन्हि जे एहिठाम सँ उठब तऽ आब कतए जायब । चाह-पान खा कए कतेको गोटए जखन चल गेल तऽ मिट्टू हिनका पुछलकैन्ह—"अहाँ कें हम कतहु देखलहुँ अछि । अहाँक डेरा कतए अछि ?" ई कहलथिन्ह—"आइ तऽ आब कतहु डेरा नहिं अछि ।" फेर मिट्टू हिनका कहियो किछु नहिं पुछलकैन्ह । एहि प्रेसक मालिक केर पचास टाका महिनवारीवला ई प्रूफरीडरी हिनका मिट्टूएक दियाओल थिकैन्ह आ' ई कोठली, जतए एखन जा रहल छथि, उएह दियौने छन्हि ।

नवल केर साइकिल कड़कड़ाइत आगाँ बढ़ि रहल छलन्हि आ' जेना निनायल बाट कुनमुनाय रहल छल । आब डेरा दूर नहिं छलैन्ह । चौराहा सँ

दुइए मकान आगाँ हिनकर कोठली रहन्हि। चौराहाक कात मे दू गोट रिक्सावला रिक्सा मे टेढ़-बकुली भेल फोंफ काटि रहल छल। मोहल्ला मे सबसँ पाछाँ आबएवला भोलू खोमचावला अपना ओसारा पर निसभेर निन्न सुतल छल। ओकर ठेलागाड़ी निचाँ मे ठाढ़ छलैक।

नवल कें पियास लागल छलैन्ह। कोठली सोझहिं मे रहन्हि। एक टा गँहीर सन हाफी भेलैन्ह तऽ जेना दुनिया भरिक निन्न समोरि कए आबि आँखिक उपरका पल कें भरिगर बना देलकैन्ह। खपरपोस कोठलीक ओलती मे साइकिल ओंगठा कए ताला फोलि भितरी गेलाह। फेर बहार भऽ कए ओलती सँ साइकिल टघरा कए ओहि कात राखि देलथिन्ह। एक टा काठी खररि कए अधजरू मोमबत्ती मे लगओलन्हि। अल्मूनियमवला लोटा मे सुराही सँ गोंठ लोटा पानि ढारि घट-घट कए पीबि गेलाह............... ।



# सइँतल सेज निहुँछल निन्न

पोग्रारक बवरा सँ झोली धरि तापि कए हेमा मुवह र जहिना गोनरि तऽर घोंसियाय लागल, दहिना पएरक बेमाय मे पोआरक खैंक गड़ि गेलैक। "इस्स ....." कऽ कए खरखर एँड़ी कें हँसोथि गोनरि देह पर लेलक तऽ ओकरा मोन पड़लैक जे ग्राइ बड्ड अबेर धरि ओ हऽर जोतति रहि गेल छल। जखन बुचना नहा कए पानि सँ उपर भेल आ' पोखरिक महार पर हऽर जोतति हेमा पर ग्रोकर नजरि पड़लक, ओ चिकरि कए बाजल—"अओ सदाय, आब भाभट समटू, बेर डूबय गेल !" ग्रा' हेमा अगिला आँतर मारि हऽर फोललक। दुहू बरद कें जोड़ि ग्रागाँ केलक। हरखंडा कान्ह पर लए महार सँ निचाँ होमय लागल कि सीसोक सिर पर दहिने पएरक एँड़ी पड़ि गेलैक। "ओह.......! इस्स.......!!" कऽ कए थूक घोंटए लागल तऽ मुँह मे एको मिसिया थूक नहि रहैक। दू-तीन डेग नेङ्गरायल सन दौड़ि कए दुहू बरदक पाँजर मे दू पेना कसिया कए मारि जेना ग्रधा-छिधा दर्द मेटओलक, मुदा ओकरा सौंसे एँड़ी रोपल नहियें जाइक।

बरद कें खुट्टा पर ग्रानि कए बन्हलक। सानी लगबैत रहए कि गिरहत हबेली सँ बहरेलैक ग्रा' ग्रोकरा गारि-फज्झतिक तऽर करैत कहलकैक—"रौ

चंडलबा, एना कसाइ जकाँ तों बरद कें कियैक मारलैंह अछि ? ओही पेना सँ तोरो पीठ जँ एखन हम फोड़ि दियौक तऽ केहेन लगतौक ?" हेमा फेर एक बेर थूक घोंटए लागल तऽ मुँह भितरी सँ चटपटाइए कए रहि गेलैक ।

गिरहतक तामस हेमा कें बुझल छैक । हेमा कें छोड़ि आर कोनो हरवाह नहि, जे एक-सँ-दू बेर हुनका तामस में पड़ि घरक बाट नहि धेने हो आ' पुछला पर नहि कहने होइक— "सहि-मरि कए घर रही से बरु कबूल, जे एहेन लोकक हरवाही नहि गछी । हाड़ तोड़ि कए काज करू आ' फा-दुआ मे लात-जुता सहू ऐहेन काज जे करत से तऽ बूड़ि मरत । कानें ऐंठैत छी फेर ने हिनका भिर जायब ।" मुदा इहो सत्ते रहैक जे हरवाह बेगइर गिरहतक काज कहियो बिथुत नहि भेलैक । गरीब आदमी कोनो लोक होइत अछि ? ओ कि गुमान करत जे फलाँ ठाँ नहि जायब आ' फलाँ केर काज नहि करबैक । ओहि सँ तऽ हेमा नीक जे कहियो चूँ नहि शब्दल जे सऽक लगलैक काज केलक जे कोन-साग भेटलैक, खेलक । ने गुमान केलक ने नेराओल थूक चटलक । रहल गारि-मारि तऽ से के एहेन अछि जे बालाबाबूक नहि सहलक अछि ? पैंच-पैंच लोकक तऽ हुनका आगाँ चउ चलबे नहि करैत छन्हि, मुसहर-बाँतर कें के पुछैत छैक ?

—नहि जानि कोमहर सँ सट दऽ तेहेन बसात एलैक जे हेमा, गोनरि आ' धुर परक ओ धान ओगरयवला खोपरी सबटा जेना एके बेर सिहरि उठलैक । हेमाक दुहू ठेहुन दाढ़ी दिस किछु आर सहटि एलैक । धुरक कातहि मे एक गोट जड़ायल खिखिर बड़ी जोर सँ खिखिया उठलैक । ओहि सुन्न-मसान राति मे जेना कुहेसक जाल कें कतरैत ओकर टाँस बोली खंड-खंड भए बाधक कात-कात केर गाछी-बिरछीमें जा नुकेलैक ।

हेमाक माय-बाप तखनहि मरि गेलैक, जखन ओकरा आँखियो पाँखि नहि भेल रहैक । लोक सब कहैत छैक, ओहि साल मुसहरी मे तेहेन फौती आयल रहैक जे



कतेको मुसहर केर घरहंज भए गेलैक । कइलो मुसहर, ओकर घरवाली, तीन टा बेटा, दू टा बेटी सब एक दिन भोर सँ साँझ धरि आँखि मुनि देलकैक आ' एकटा हेमेटा कें भगवती माय बकसलथिन्ह । हेमा कें ई सब कोनो टा बात बुझल छैक ? ओकरा तऽ एतबैक मोन छैक जे ओकरा जड़ैया बोखार आयल रहैक । कतेको आङ्गन मँगैत-चँगैत बालाबाबूक दुरुखा लग ओ आयल तऽ बेसुधि भऽ कए खसि पड़ल । आँखि फुजलैक तऽ हुनका खरिहान मे धानक बोझ सबवला खोपरिक अधरौदिया मे पोआर पर पड़ल रहए । बालाबाबू ओकरा सुगबुगाइत देखि चिकरि कए कहने छलथिन्ह—"गए सोमनी, एहि छौंरा कें किछु खाय लेल दही ।" पुतली पहिरने सोमनी केराक पात पर अरु-वायल सन भात-दालि आनि कए देने रहैक । हेमा ओकरा चाटि-पोछि कए खा गेल रहए । ओकरा भूखो बड्ड लागल रहैक ।

तहिया सँ फेर ओकरा सरिपों किछु नहि भेलैक । बालाबाबूक महिस पर ओ ओही बेर सँ रहए लागल छल । जर-बोखार जे किछ होइक महिसियेक पीठ धरि आ' बाधे-बोन धरि रहैक । गाम पर अबितहिं जेना ओकरा फुर्तिये फुर्ती भए जाइक । ओना फेर कहियो ओ बदहोसो नहिं भेल ।

—हँ एक बेर ओकर बोखार अवस्से हठ धए लेलकैक । देह सँ लगैक जेना धधरा बरइत अछि । माथ फुटल जाइत रहैक आ' चलए तऽ देह भितरी सँ केराक भालरि जकाँ कँपइक । दू दिन धरि ओ महिसिक घर मे एक कात पड़ल रहए । तेसर दिन सोमनी आबि कए ओकरा पुछलकैक—"केहेन मोन छऽह ?" हेमा कें आँखि खोलले नहि जाइक । आँखि मुननहि कहलकैक— "देह टुटल जाइत अछि । लगैत अछि जेना देह खंड-खंड कटैत होअए । माथ चनकैत अछि ।" सोमनी ओकरा लग बैसि गेल रहैक आ' सौंसे देह जेना दुहि देने रहैक । जखन ओ माथ दाबय लगलैक, हेमाक आँखि सँ नोर बहए लागल रहैक । ओ सोमनी कें कहलकैक—"सोमनी, हमर माय-बाप, भाय-बहिन सब मरि गेल, हमहीं टा कियैक बचि गेलहुँ ?" सोमनी किछु नहिं बाजलि छलि ।

सुतली राति मे गिरहत एलैक ।

जखनहिं सुनलकैक हेमा असक्क अछि, पित्तें जेना बताह भए गेलैक— "हम गाम सँ गेलहुँ आ' ई भगल काछि लेलक ? काल्हि हम हिनका पीठक छाल घैंचि लैत छियन्हि । खेबाक बेर अफरि कए खायत, मोटा कए गोहि भए गेल अछि, आ' काजक बेर नीमकहरामी ? बिनु एँड़ लगने रार बहतर भइए जाइत अछि ।"

—ओ महिसिक घर टार्च देने रहैक ।

—महिसिक आगाँ छिल्ला घासक ढेरी छलैक । मिझाइत चिनगोरा सँ जेना भाफ उठल छलैक—"ई घास छिल कए के अनलक ?" हबेली सँ कियो कहलकैक—"सोमनी छीलि अनने छलि"—हेमा अँगेठी कए लगले लागल तीन बेर करोट फेरने छल । गिरहतक मुँह सँ बकार नहिं फुटल छलैक—"सोमनी ... ।" हेमा अन्हरोखे उठि कए पऽसर खोलने छल । महिसवार सभक संग छोड़ि मुसहरिये दिस गेल रहए, मुदा कातहि कात महिस चरा कए फिरि आयल रहए । सोमनीक आँगन ओ कोना जइतैक ?

ओहि बेर सँ फेर ओकरा कहियो किछु नहिं भेलैक । बिनु बोखारोक फुसियाहा बोखार कहियो काल गिरहत छोड़ा दैक सएह । छौ मास-बरख दिन पर गिरहतक ओतए आबयवला एकटा पाहुन ओकरा कहलकैक—"छौंरा छऽबे मास मे फुटि कए जवान भए गेल । छऽबे मास पर तऽ हम एलहुँ अछि, ऊन सँ दून भए गेल अछि । की रौ, बियाह-दान केलैंह कि नहिं ? आ' हेमा बचि गेल नहिं तऽ ओ हँसिये दितैक ।

हेमा गिरहतक हरवाह भए गेल । महिस पोसिया लागि गेलैक । सुरूजो नहिं उगैक कि हेमा हर-बरद लए खेत चल जाय आ' जखन घूरय तऽ सोमनीक पाथल गोरहा पाँतीजोर सँ सुखाइत देखि ठकमुरिया कए ठाढ़ भऽ



जाय । फेर जेना आसक हिड़ला कें आसि लगबैत एक बेर सोचय—"अच्छा, काल्हि सबेरे हऽर फोलब । किन्तु, ओ काल्हि जखन अबैक तऽ गिरहतक कहल भरि खेत जोति कए दू भार चौकी देबा मे बेर बहि जाइक आ' हेमा हतोत्रास भए जेना मुँह भरे खसि पड़य ।

—ओहि दिन हेमा भूखें-पियासें आँट भेल हर जोतैत रहए । रतुका किछु बचितैक तखन ने मिसराइन ओकरा पनिपियाइ दितैक ? भूखें लाहलोट दैत आ' भितरी सँ अँहोछिया कटैत कोनहुना टुकदुम-टुकदुम ओ बरदक पाछाँ चलैत रहए आ' ओकर मोन दरबर मारने पहिने हवेलीक भनसाघरक ओलती मे ठाढ़ भेलैक । चुकीमाली बैसलि मिसराइन कें हुक्का पिबैत आ' आँच उसकबैत देखि जेना कलपि कए कहलकैक—"मिसराइन, मोन अछि, मुठिया चाउर सँ कपचल बेचक तलख पीनी अहाँ लेल दोकान सँ कोना नुका कए हम अनने रही ?"— किन्तु मिसराइन कथी लेल कान बात दितैक ?

बड़कीबहुरियाक कोठली केर ओसाराक कंगनी लग भए ठाढ़ भेलैक आ' कहलकैक—"बड़कीबहुरिया, नैहर तसमै रान्हि कए जे अहाँ कें पठेबाक छल तऽ हमहीं गोअरटोली सँ टिप-टिप बुन पड़ैत अन्हरिया राति मे दूध आनि देने रही । घुरि कए एला पर गिरहत जे कनैठी देने रहए, एखनहुँ मोन अछि । आ' तइयो हम खुलासा बात नहियें कहने रहियैक"— किन्तु के सुनइत अछि ? बहुरिया दहिना हाथें बामा तरहत्थी पर मेहदी लगेबा मे तन्मय छलीह ।

......ओतए सँ सहटि कए जे बड़कीमाँजी लग ओकर मोन गेलैक तऽ हुनका सँ दू हाथ फराके आँगन मे धरती पर बैसि गेलैक । ठाढ़े नहि भेल जाइक । हकमि कए जेना कहलकैक—"भूखे हमरा नहिं अँगेजल गेल रहए तऽ हम अहाँक दुरुखा लग अचेत भए गेल रही माँजी । जर-बोखार तऽ हमरा अँगेजले अछि । किन्तु, माँजी अपन उखड़ल दम्मा अँगेजितथि कि हेमा दिस तकितथि ! आँखि मुनने पड़लि रहलीह ।

—बरद सब हऽरे टा नहि हेमो कें घिचने चलबाक उपकार कए रहल छल। एक बेर हतास भऽ कए गरियायल आँखियें ओ सौंसे बाध नजरि खिरओलकैक तऽ भूख-पियास जतए रहैक ततहि जेना ठमकि कए ठाढ़ भए गेलैक। जवानीक देहरि पर थकमकायलि ठाढ़ि आ' फेर नहूँ-नहूँ डेग दैत सौंसे बाध मे जेना सोमनियें टा अबैत छलि। देखितहिं हऽर ठाढ़ कए हेमा दू-तीन आरि टपि कए सोमनी दिस बढ़ि आयल। ओकरा हाथ सँ पनिपियाइ आ' पानिवला छोटका दोल लैत पुछलकैक—"के कहलकौक पनिपियाइ नेने आबय, मिसराइन ?" सोमनी मुड़ी हिला कए 'नहिं' कहलकैक तऽ ओ फेर पुछलकैक—"बड़कीबहुरिया ?" ओहू मे 'नहिं' सुनि कए बाजल-"तखन के, बड़की माँजी ?"—"हमहीं पुछलियैक जे तों जलखइ खा कए हऽर जोतए गेलह अछि कि नहिं"—किछु लजाइत सन जकाँ जे सोमनी कहलकैक तऽ हेमाक करेज जेना जमुन्न भारी भऽ गेलैक आ' ओकर नोरो आँखिक कोर सँ हुलकी दइए दितैक कि जेना गरगोटिया दऽ कए ओ मुँह सँ हँसी कें बहार कए देलकैक।

—"बेर झुकि गेलैक खा लैह"—सुनितहिं ठामहिं बैसि गेल आ' मड़ुआक रोटी तोड़ि देलकैक तखन मोन पड़लैक-"जाह, हाथ तऽ धोबे नहि केलहुँ।" सोमनी कें हँसी लागि गेलैक आ' हेमाक नजरि फेर ओकरा बुट्टी भिड़ा कए ठकि लेलकैक—सोमनीक मुँह ओकरा तकले नहि गेलैक।

गोनरि तऽर पेटकुनियाँ भऽ कए हेमा टाँग सोझ कऽ देलक तऽ सगरे देहक जोड़ एके बेर कटकटा उठलैक आ' गोनरि घुट्ठी सँ उपरे रहि गेलैक। धानक सीस खोंठए बहरायल मूस सब धरफरा कए बीहड़ि मे ढुकलैक से पाकल धानक सीस सब झरझरा उठलैक।

……सोमनी कें मइया भए गेल रहथिन्ह किने! ओ जे सुनलकैक आ' देखए गेलैक तऽ ओकरा ओ कोना चिन्हितैक? सगरे देह तऽ ओकर झाँपले



रहैक मुँहें टा उघार रहैक। मुँह, आँखि, कपार, सबटा फोंका सँ एकबट भेल रहैक। हेमाक मुँह सँ बहरा गेलैक—"अयँ, इएह थीक सोमनी ?" आँखि ओकर मुनल रहैक। देह मे परानो छैक तकर कोनो चेन्ह नहि बुझि पड़लैक। भितरी सँ जेना ओ चौंकि उठल—"सोमनी मरि तऽ नहि गेलि ?"

—कि तखनहिं सौंसे देह ओ एके बेर तानि देलकैक। जेना खूब कसि कए बान्हल बोझ फूजि कए एके बेर भहरा गेलैक।

आ' तहिया सँ हेमा सब काज तऽ करितहिं अछि, खायबे ओकरा नहिं मोन रहैत छैक। तैं कि भूख नहिं लगैत छैक? भूख नहि लगितैक तऽ गारिक कोन बात मारियो खाइत अछि, कियैक खइतैह? आ' चोटो तेना कए सहियारल भए गेलैक अछि जे जखन लगैत छक तखन ओकरा निजेबोक मोन नहि होइत छैक।

—के बुझतैक जे माय, बाप, भाय, बहिन सभक संग जखन सोमनियों भगवतिये मायक भऽ गेलैन्ह तऽ खाली निन-कऽल ओ अपना लेल कथी लए राखत ?

# तेजि गेल बिदेस···

डाँड़ पर लटकलि बरख दिनक सुबधी कें दूध लगओने बुचनी जखन आँगन सँ बहार भेलि, जेठ मासक सुरुज करियौती बहि कए थइर पर आयल कइला बुढ़वा बरद जकाँ सलहेसक थान केर बड़का झमटगरहा पिपरक निचाँ मे थुस दऽ बैसि कए आँखि झपला रहल छलैक। कलराक अधोखी मे खजूरक टुटलाहा सितलपाटी पर करोट भेल ठरर पारैत बुधना कें देखि कनहा पर अंगपोछा जकाँ राखल अभेला कएल आँचर पर बुचनीक अगुतायल सन हाथ जहिना गेलैक, मइल खटखट नुआक मुरहि मे ओकर आँगुर पड़ि गेलैक आ' सर्र दऽ आँचर फाटि गेलैक।

—सुबधी डाँड़ सँ निचाँ ससरि गेलि, मुँह सँ दूध छूटितहिं एके बेर सगरे देहक जोर समटि बड़ी जोर सँ चिचिया कए ओ दम साधि लेलक—

"रोटी तियन रीन्ह कए राखल छै गऽ। खायत गऽ कि मरकर खेने अफरल पड़ल अछि गऽ ?"—कहि डाँड़ पर सँ ससरैत सुबधी कें झमारि कए

बुचनी डाँड़ पर लेलक ग्रा' ग्रोकरा मुँह मे दूध कोंचि देलकैक। रेजियो चक्कूक धार सँ चोख बुचनीक ई बात बुधनाक करेज मे तऽ कि घसितैक ओ ग्रोकरा पीठहि पर पिछरैत तेना कात भऽ खसलैक जेना पोखरिक पानि पर नेना-भुटकाक चलाग्रोल झुटका पिछरैत-पिछरैत दोसरा दिस किछी मे माटि पर भऽ खसैत छैक।

"अही मुसहरी मे आर लोक कि नञ छै गऽ? पूब-पच्छिम जाइ छै गऽ, धिया-पुताक दिन-गुजर चलबइ छै गऽ कि एकरे जकाँ घर बइसल माछी मारैत रहइ छै गऽ? खाइक परसै जाइ छियै गऽ। साँझ पड़ए गेलैक कखनी खायत गऽ?"—कहि बुचनी घुरि कए ग्राँगन ग्रायलि। दूध लागलि सुबधी कें कोरा सँ उतारय लगलैक तऽ ओकर दुधा दाँत दूधक तेहेन मोह देखग्रोलकैक जे दाँत-पर-दाँत बैसा कए बुचनी ओकरा घीचि भुइयाँ पर ओंघरा देलकैक ग्रा' पीठ पर एक चाट मारलकैक—"रछछनियाँ मरियो ने जाइ छै गऽ। हमरे लए बथायल छल गऽ। सब तुर हमरा खोरि-खोरि कए डाहत गऽ"—कहैत ग्रोलतियहि सँ लिब कए ग्रन्हार घर मे पैसि गेलि। एकरा ठेंठी कोदारि सँ छीलल खरखर ग्राँगन मे कनैत सुबधी ओंघरा एमहर-ग्रोंघरा ग्रोमहर करैत रहलि।

—"गिरहत की कहलकैक गऽ? सवाइ ग्रा' टका कहिया देतैक गऽ?" —बुचनी पुछलकैक तऽ बुधना बीत भरि ऊँच ग्रोसारा केर बाँसक खुट्टा मे ग्रोङ्गठल बइसल खेसारीक रोटी ग्रा' डोकाक तिमन केर आखरी कऽर मुँह मे लऽ लेलक। ठाम-ठिम पचकल बियाहेक साल मोरंग मे कीनल टिनहा लोटा सँ भरि छाँक पानि पीबि आ' ठामहि घुरि ग्रो थारी पीठक पाछु कए लेलक। बाँचले पानि सँ हाथ धो कए उठय लागल तऽ ग्रोकरा भारी देहक भऽर सँ बाँसक खुट्टा कड़कड़ा उठलैक ग्रा' सौंसे घर हिलि गेलैक। खुट्टाक कोन दोख?



ककरा घर मे ग्रो एक बरख सँ दोसर बरख जाइत छैक? आ' एकरा तऽ दोसरो बरख लागए एलैक।

दू बरख कनियें दिन होइत छैक? अही दू बरख मे की-सँ-की भए गेलैक? ओ तऽ धनि कही बुचनियें कें जे मुँह ठोर घने रहइत ग्रछि तैं एतबो-एतबी, नहिं तऽ बुधना तऽ परौग्रा असामी बनियें कए ग्रायल रहए, पड़ायले जाइत रहए। गिरहत नहिं पोल्हैबतैक तऽ ओकरा बुचनीक कोनो फिकिर रहैक। सलहेसक थान तर ओहि ग्रन्हरिया राति मे एकरा कलऽपनहिं की होइतैक—"जनथिन्ह राजा सलहेस, ग्रपने तऽ चल जाइ ग्रए गऽ, हमर कोन राह-बाट हैत? इनार-पोखरि धसि कए हम मरि जाइ से बरु कबूल, तैं सिरचनमाक सौख नहिं पुरतैक। हमरा कोन, आगू नाथ ने पाछू पगहा। बाउक परान अपटिये खेत मे चल गेलैक। झरकल मुँह झँपनहिं नीक। आब ई मुँह हम ककरा देखेबैक? जाइ ग्रए तऽ जाव, हम तऽ परान अरोपनहिं छी।"

—मुदा एहेन निफिकिर कतहु लोक होग्रए? भोनू भाब ने जानय पेट भरन सों काम—

दुरुखो ने टपल हैत बुधना कि खापड़ि मे धऽक लागल मड़आक रोटी सन ऐतिखाइन स्वरें बुचनी बाजलि—"भरि थारी गीर लेलक गऽ कि मुँहक बाक जेना हरन भए गेलैक गऽ! राति फेन ई मलगोबा गीरय नहिं भेटतैक गऽ। पेट बान्हि कए ओकर काज करै छै गऽ तऽ खाइ लए घर कियै अबइ अए गऽ?"

... ... ... ... ...ग्रपन-ग्रपन लुरि-मुँह होइत छैक। एहेन गब्बर लोक कें किछु कहब ग्रपने मुँह दुरि करब थीक। गिरहतक कोन दोख छैक? कोन गिरहत ने जऽन-बोनिहार कें बात-कथा कहैत हेतैक? मुदा, दू टा गारियो दैत छैक तऽ बेर-बखत पर काजो उएह ग्रबैत छैक। ओहो तऽ गिरहते कें कही, नहिं तऽ एहि मुसहरी लेल तऽ ई हरही गाय रहबे करए, एकरा हाकरोस केने की

होइतैक ? सिरचनमा तूल-तैयार रहबे करइक, पकड़ि-धकाड़ि कए सब एकरा गरा मे ढेकुल बान्हियें दितैक । ई डेग उठबितैह् तइयो ठक् दऽ चोट लगितैक ग्रो डेग उठबितैह् तइयो ।

बातो कि कनियें टा रहैक ? ग्रोहि झोलफल अन्हार मे ग्राँगन लगक एकबट्टी पर सिरचनमाक बात एकरा तेहेन लेस देने रहैक जे ई एक धोनहा थूक ग्रोकरा देह पर दए झटकि कए आँगन ढुकि गेल रहए । बीच ग्राँगन मे बैसल एकर बाउ जे एकरा टोकने रहैक—"की भेलौक दैया ?"—तऽ एकर ठोर सीलै रहि गेल रहैक किने ? बिन माइक बेटी निमुँह धन होइतहि ग्रछि । ग्रोकरा मुँह मे बोल नहि ग्राँखि मे नोर नहि ।

ग्रा' ताहू पर पराते भेने पोखरिक पानि भरि कए किछी सँ नहूँ-नहूँ महार पर चढ़ैत बुचनी दिस दाउर पर सँ टक-टक तकैत सिरचनमा घाव पर नोन छिटैत जे कहने रहैक—"देख लिहें बुचनियाँ, बियाह हम तोरे सँ करबौक"—तखन जे एकर देह जरि कए खकसियाह भेल रहैक, सेहो एकरा ककरो कहल गेल रहैक ?

बुधनाक संग मोरंग सँ घुरैत कैलू भगता केर ग्रो टके भरि दर्द कोन काल रहैक, के जानय ? कतेको बेर मुँह सँ गाउँज-पोटा जाइत मुइल मुरदा कें जे सलहेसक भगता, एकर बाउ, उठा कए ठाढ़ कए देने रहैक से कि ई ग्रपना आँखि सँ नहि देखने रहैक ? के जनैत रहैक जे भगतेक गरू मे सलहेसक सबटा सतिया खतम भए जेतैन्ह ।

घामे-पसेन तर-बतर भेलि सुबधी कें जोर सँ चिचियेबाक दम जेना नहि रहि गेल छलैक । चिचियेबा सँ बेसी ग्राब ग्रो हिचकय लागलि छलि : बुचनी कें निट्ठाह निन सुतल मे जेना कियो घबरियायल सन बात कहि कए जगा देने होइक । हपसि कए सुबधी कें कोरा मे उठा ग्रोसाराक कंगनी पर खुट्टा मे ग्रोङ्गठि कए बैसि ओकरा दूध लगा लेलकैक आ' ग्रोकरा दिस मम्मत-



बला आँखियें तकैत ग्रोकरा पसेनावला माथ कें नहूँ-नहूँ हँसोथय लगलैक । सुबधी दूध लगितहि ग्राँखि मुनि नेने छलि, किन्तु लटलि जकाँ दूध घेनहि भरि छलि । ग्रोकरा भरल मुँह सँ कखनहुँ काल हिचकीक संग कुहरब सन ध्वनि सेहो बहरा जाइत छलैक ग्रा' बुचनीक आँत जे ग्रोहि सँ कचकैक से तऽ कचकबे करैक, करेज कें एहि पार सँ ग्रोहि पार जेना ओ कुहरब छेदि दैक । ग्रा' तखन लगैक जेना एकरा आँखि सँ नोर ग्राब बहलैक तब बहलैक ।

सुबधी असोथकित भए कोरा मे लगले निन पड़ि गेलैक । दिन लुकझुक करए ग्रायल छलैक, कौछन मे साँझ पड़ितैक । बुधना कें खोआ लेला पर बाँचल ग्राध गोट रोटी ई खुट्टहि लग सँ ओकरा साँझुक पनिपियाइ लेल छोड़ि देलकैक । सुबधी कें कोरा सँ ससारि कए ग्रपनहि लग पारि देलकैक । ग्रो सुगबुगेबो नहि केलैक । खुट्टा मे ग्रोङ्गठले ई कनेक कऽज भऽ गेलि । सुरुज डुबितहि कतेक दिनक बिसरल मोन पड़ि ग्रायल सिनेह जकाँ सिहकैत पछवा जे देह मे ठंढा लगलैक, मुनहारि साँझ धरि बुधनाक घूरब मोन पड़लैक तऽ सबटा आलस जेना एके बेर पाँखि पसारि एकर सौंसे देह छापि लेलकैक । ई ग्रोतहि निन पड़ि गेलि ।

नहि जानि कतबा कालक बाद बुधना माथ पर सँ धानक मोटा ग्रोसारा पर पटकि देलकैक तऽ बुचनी जेना चेहा कए उठि कऽ ठाढ़ भऽ गेलि । ओलतीक सड़ल छरैन मोटा ग्रभरितहि ओतबा दूर सँ तुबि कए बुधनाक कनहा पर खसि पड़लैक ग्रा टुकरी-पुरजी भए गेलैक । बुचनी भितरी सँ ठकमुरियायल सन टिनहा लोटा उठा अन्हार घर मे ठेकना कए घइल सँ पानि ढारय गेलि आ' बहरायलि तऽ ग्राँगन एकरा बेसी ग्रन्हार लगलैक । बुधना कें नहि देखि लोटा ग्रोसारा पर राखि टोइया-टप्पा दैत जकाँ मुँहथरि लगक एकबट्टी धरि आयलि । सगरे मुसहरी जेना निसबद्द भए गेल छलैक । एकबट्टी लग ग्राबि थकमकायलि जकाँ ग्रोहि ग्रनचिनहार सन ग्रन्हरिया कें जेना ग्रपना नजरि सँ गोजय लागलि । जी जेना धक् दऽ उठलैक ! रतौन्हियों तऽ एहिना होइत छैक···?···!···?

# काँट कुसक छाहरि

पोखरिक सबसँ उँचका पुबरिया महार परक पुरनका सिमरक गाछ केर फुलंगी पर खुटेर एक बेर बड़ी जोर सँ किलोल कए उठलैक। ओकरा "क्रांग···क्रांग···" केर लहरि चऽर-चाँचर, बाध–बोन, पोखरि-झाँखरि आ' जेना घऽर-घऽर आ' कोनही-कोनही मे सबतरि पसरि गेलैक। चसकल मोने बँसबिट्टी छोड़ि घरक कोनटा दबने रहएवला एकेटा गिदर घरडिहे लग पुक्की पारलकैक, किन्तु गाम भरिक कुकर घसमोरने निसभेर निन्न सुतल रहैक, कोम्हरो सँ ओकरा टोकारा नहिं पड़लैक। डरें सिटपिटायल मुरगो थार खसओनहिं रहि गेल। डाबरक किंछीवला झाँखुर सँ भरिसक बोनबिलारक सहटि पाबि एक गोट बोनमुरगी फुर्र दऽ उड़लैक आ' बीच डाबर केर कुम्हीं-केचली मे धोंसियाय अपना चलाकीक डंका पीटय लागि गेलैक। सगरे डाबर सुगबुगा कए जेना ओकरा चलाकीक लोहा मानि लेलकैक।

खुटेरक किलोल कान मे पड़ितहिं सुजनियाँक निन टुटलैक। फटक टारि कए ई घर सँ बहार भेलि तऽ सहर्जाहि बाजि उठलि—"बाप रे, परात भए

गेलैक, आब कखन हम चारि आँगन पानि भरबैक आ' कखन ओतेक टा आँगन बहारि कए निपबैक ? आ' फटक भिरका कए ई ओसारा सँ उतरि आँगन सँ बहार भए गेलि ।

इजोरिया पख बितैत जकाँ रहैक । थइर पर बैसल महिस सब पाज करैत रहि-रहि कए जोर-जोर सँ साँस छोड़ि दैत छलैक । बाटक कात मे मझोलका खजूरक गाछ केर छाया सब ओहि इजोरिया मे जेना आँखि निरारने छलैक । अधठुट्ठा कटहरक सुखलाहा ठाढ़ि पर सँ टिकटिकिया टिक्-टिक् केलकैक आ' सुजनियाँ पहिल आँगनक घइल लेबय ओहि आँगन पैसि गेलि । कोलियारियहि सँ घैलची परक सब सं एम्हुरका घइल उठा पोखरिक पानि लेबए चलि देलक ।

खुटेरक एही किलोल पर कतेको दिन सँ सुजनियाँक परात होइत एलैक अछि । ई मझोलका खजूरक गाछ, एहने इजोरिया, अधठुट्ठा इएह कटहर आ' सभक पाछाँ ओकरा मोटका सुखलाहा ठाढ़ि परक ई टिकटिकिया एकरा संग जगैत एलैक अछि । किन्तु, तैं कि सुजनियाँक सबटा बात ओकरा सब कें बुझले छैक ? ओकरा सब कें तऽ इहो नहि बुझल छैक जे आजुक सुजनियाँ कहियो सुजान भऽ कए आँखि खोलने छलि । एकर खेल-धूप, कनियाँ-पुतरा, सखी-बहिनपा सबटा पुतलिये पहिरबाक दिन सँ कुटाओन-पिसाओन भए गेल छलैक । आ' ताहि बिचो मे कहियो काल जे माय एकरा शोर करैक—"गे सुजान, ठोंठ कुचकुचाइ अए, एक दम हुक्का पिबितहुँ तऽ ई एहि आँगन-ओहि आँगन दौड़ि कए माय लेल आगि अनैत छलि, धुआँ सँ आँखि लाल ओढ़ूल भए जाइक तइयो मुँहें सँ फुकि कए ओकरा सुनगबैत छलि आ' चिलम भरि कए मायक हाथ मे दैत छलैक तखनहिं दम लैत छलि । ई सब बात ओकरा सब कें बुझल रहितैक तखन कि छलैक ?



सुजनियाँ घइल नेने पोखरिक पछबरिया महार पर आयलि । ओना इहो महार कम ऊँच नहि रहैक । परुकाँ खन जे सताढ़ि लधने रहैक, दछिनबरिया-पछबरिया एहि भित्ता पर तेहेन धसना खसलैक जे एहि तेतरिक गाछ केर एक भाग सँ सबटा सिर उघार भए गेलैक । बरखो केहेन रहैक, दुरकाल बितैत रहैक । सात दिन-सात राति सुपाने बरखा उझलैत रहलैक । आ' लोको सब केहेन जे धसना खसितहिं एही दऽ कए पोखरि जेबाक रस्ता बना लेलकैक । एहि महार पर आब ने गनल-गुथल गाछ रहि गेलैक अछि, नहिं तऽ एकरा उतरबरिया कोन पर एकटा कचनारक गाछ सेहो रहैक । सगरे गाम मे आर कतहु रहबो करइक कचनारक गाछ ? आ' जहरकनैल तऽ एखनहुँ छैके । मगर केहेन लदमलाद फूल फुलाइत रहैक ओहि मे ? मधुसरामनी मे कतेको फुलडाली एकटा ओही फूल सँ लोक भरि लिअए । आ' बंगलाहीक झाँखर मे बोनबेली कि कम फुलाइक ? सौंसे महार जेना जगमगाइत रहैक । तोड़ए जाउ कि खुच दऽ बंगलाही-काँट हाथ मे गड़ैक, बन दऽ सोनित फेक दैक । बरखा बरिस कए चल गेल आ' महार गम-गम करितहिं अछि ।

–आ' एकटा ई बरखा परुकाँ खन भेलैक जे तेतरिक एक दिसुक सबटा सिर उघार कऽ देलकैक । ई तेतरिक गाछ सुजनियाँ केर की नहि जनैत छैक ? मुदा, ई तेतरियोक गाछ कि एहने रहइक ? केहेन लगैत छैक आब ई, जेना माथ पर बिन तेल-कूड़क सुखायल-पुखायल छत्ता सन केस ! डारि-पातक उएह हाल छैक । सौंसे गाछ जेना सिरे सिर बहकल छैक । इएह गाछ रहइक किन, जे उपर सँ निचाँ डारि-पात सँ झबरल रहैक । जड़ि मे गेलहुँ कि परदे-परदा ।

कनेक नजरि बिलमा कए सुजनियाँ तेतरिक जड़ि दिस तकैत रहलि । मोटका सिर सब तऽ मुँह नुकबए लेल मुड़ी माटि मे गाड़नहुँ रहैक, पतरका सब माटि सँ छुटल उघार-पुघार ओहिना मुँह बौने रहैक । सुजनियाँ एही गाछ तर 'सुजानो' भेल रहए किने ! आब 'बिलासू' कें के कहतैक 'बिलसबा' ? ओतेक लहना-तगेदा चलैत छैक । खेती-पथारी तऽ पहिनहुँ होइतहिं रहैक, जिनगी भरिक कोसल भरबाक काल माय देने गेलैक । मुदा, आइ जे 'बिलासू'

छैक, मड़ग्रो भरि एकरा मे ओ 'बिलसबा' रहि गेलैक अछि। ने ओ नगरी ने ओ ठाम। केहेन लगैत रहैक ई पोखरि आ' एकर चारू महार ओहि इजोरिया राति में ? मोजर भरल लिबल ग्रामक डारि-पात सँ सटैत सिहकल अबैत बसात एहि पोखरिक पानि मे केहन छोटका-छोटका हिलकोर उठा देने रहैक ? आ' तखनहि पीरा चलानी गंजी पहिरने, गरदनि मे कंठा, गोर अदक्क बिलसबा एकर मुँह उपर उठा कए कहलकैक—"सुजानो, तोरा बिना हमरा कतहु नीक नहि लगैत अछि"—आ' एकटा रहुक थऽर पुबरिया कनछरि सँ तीन हाथ उछलि कए बीच पोखरि मे ढब दऽ खसल रहैक। केहेन जोर सँ डेरा उठलि रहए ई ? जेना थरथरी पैसि गेल रहैक एकरा। कोन-कोन उपाय ने केने रहैक बिलसबा ? की-की ने केने रहैक ओ, लगैक जेना तरहथिए पर रखतैक, मुदा कतए गेलैक ग्रो सबटा ? चारू कातक इजोरिया सँ कतेक डेरायलि रहए ई ? अपन भरि किछु नहिं छोड़ने रहैक ओ, मुदा एकर थरथरी कोना बढ़ले गेल रहैक ? कतेक दिन भेलैक तकरा ? के सुनने रहैक ओ सब टा बात ? के देखलकैक ओ सब किछु ? सबटा एही गाछ तर, एही माटि पर भेल रहैक किने ?

—आ' लोक सब तऽ एकर बियाहो कए देलकैक गाम सँ पाँच कोस पर। नामो कोना लेत ई ओहि गामक ? आ' ताहू पर ई बसितैह कि ओतहु सँ बँगाला जइतैह ? छान-पगहा तोड़ि कए पड़ा आयलि। ओहो खोज-पुछारि नहियेँ केलकैक। मुदा, समाज बड़ पैघ थीक। फेर समाजे रहैक जे एकर एतेक टा जिनगी गुदस्त भए रहल छैक किने ? एक टा पेट तऽ कुकुरो पोसैत अछि आ' ई तऽ लोक थिक।

मुदा धनि कही एहि गाछ कें। कचनार सुखाइयो गेलैक आ' कटियो गेलैक। जहरकनैल तऽ भेल जहर-माहुर। ओकरा रहनहिं कि आ' सुखनहिं कि ? बेलीक तऽ उकन्नने भए गेलैक। अहू गाछक जड़ि केर अधा माटि एकरा सिर सब कें तोड़ैत-ताड़ैत जल-परवाह लेलकैक। कतहु कियो सुनगुनियों पओलकैक ओहि सब बात केर ?



किछी मे सिक्कठिक झोंक मे किछु बड़ी जोर सँ घरफरेलैक कि सुजनियाँ चौंकि उठलि। एकरा जेना डर पैसि गेलैक। डेरायले आँखियें ई चारू कात देखलकैक। खाली घैल एकरा बाँहि सँ जेना कसा गेलैक। पुबरिया महार पर बड़का मोटका सुरुंगहा सिमरक गाछ अपन बेपातवला डारि चारू दिस पसारने छलैक। एक बेर उपर सँ निचाँ ओहि गाछ कें देखियो नहि सकलैक सुजनियाँ कि खुटेर किलोल कए उठलैक। ओकरा "क्रांग……… क्रांग……" केर सब टा लहरि जेना एकरे देह मे पैसि गेलैक…… !

# एक पोस्टकार्ड : सरोजिनी आ' हम

"ई पोसकाट कोनो परोफेसरेबाबूक थिकन्हि सरकार! बड़ाबाबू कहलैन्ह अछि"—कॉलेजक वृद्ध चपरासी सोनू हमरा दिस पोस्टकार्ड बढ़ा देलक। हम एकसरे स्टाफ रूम मे बइसल 'लूई फिशर' कृत 'एम० के० गांधी' मे डूबल रही। अन्यमनस्क जकाँ सोनूक हाथ सँ पोस्टकार्ड लऽ लेलियैक। पोस्ट-कार्ड तहदर तऽ नहियें रहैक, ठामठीम पानिक ठोप सब जेना खसि पड़लाक कारणें आखर सब धोखरल जकाँ रहैक।

आखर तऽ कोनो अछरकटुआक लिखल सन लगैत छैक—सोचि कए जे हम पता पर ध्यान देलियैक तऽ सहसा मुँह सँ बहरा गेल—'अयँ, ई तऽ हमरे नामे अछि।"

"बेस सरकार"—कहि सोनू स्टाफ रूम सँ बहरा गेल आ' हमरा बुझि नहि पड़ल जे के ई पोस्टकार्ड हमरा लिखने अछि। उपर मे लिखल रहैक—"हे बाबो रतनजी···" आ' अंत में—"अहाँक उएह सरोजिनी।"

हमरा अपना भौजीक गाम गेना कम दिन नहि भेल! एतबा दिन होइत रहए कहियो? एम० ए०क परीक्षा दऽ कए आखरी बेर गेल रही। तऽ ई

छथि 'सरो दाइ' हमरा भौजी केर दूरक संबंध बहिन—एक टा मुसकान, नहिं जानि, कतए सँ चलल जे ओकरा बहरी नहिं आबि भेलैक, मुदा ओकरा लहरि मे संपूर्ण अतीत जेना संगीत बनि कए मुखरित भए उठल ।

एक गोट निम्न मध्यवित्त परिवार, जकरा सोझाँ केर समाधानो सब समस्येक जंजाल मे पड़ल रहैत छैक। कतबो संस्कारी बालक कें इ इस्कूलक फाटक तोड़ितहिं आगाँ पढ़बाक मार्ग छोड़ि आगाँ बढ़बाक मार्ग (आर नहि किछु तऽ गुरुजी बनबाक ट्रेनिंग) पकड़बा लेल अपना पएर पर ठाढ़ भऽ जेबाक हुरकुत्ति पड़ैत छैक। खेत-पथार जे किछु रहइत छैक तकरा जँ हर-बरद भेल तऽ हरवाहे नहि आ' हरवाह भेल तऽ बीये नहि, तँ बटाइयेक आस रहैत छैक। खेतक धान पूसो माघ धरि तेना चलैत छैक जेना बकरी कतेक गरगोटिया देला पर घुट्ठी भरि पानि टपैत अछि। नेना-भुटका डेन चढ़ौनिहार बेतरेक बहतर भए जाइत छैक। ढेंढ़बा होइत-होइत काज सँ बेसी कटाउझ करबा मे कुशल भए जाइत छैक। अपना दलान पर कम आ' परोसियाक मचान पर बैसब ओकरा बेसी पसिन्न पड़य लगैत छैक। ओ सब सीट-साटक सोच-फिकिर मे ससरि-फसरि कए दसमे वर्ग जाइत-जाइत उठान हारए लगैत छैक जेना भदबारी मास मे बीच गामक बाट पर भरि ठेहुन हेंक देखि गाड़ी मे जोड़ल कोंढ़ि बरद पहिनहिं घरपटनियाँ लाधि दैत अछि। ओहि परिवार मे भागमन्त कन्या नहिं जनमैत छैक।

आगाँक आखर पर नजरि दौड़ि गेल—"अहाँ कें तऽ हम आब मोन नहियें हैब ?" कहियोक 'सरो दाइ' सोझाँ मे ठाढ़ि छलीह। गहुम सन रंग, पैघ-पैघ आँखि, पातर ठोर, दुबर काँति, मझोला कद। हाथ मे कुरुस आ' अधा बुनल मनीबेग। हुनकहि संग एक गोटा आर। बी० ए०क छात्र। श्याम वर्ण, छरहर देह, सोनहुला चश्मा, केश उपर मुँहें सीटल, रेशमी कुरता, बंडी, बगुलाक पाँखि सन उज्जर धोती, मुँह मे पान आ' हाथ म एक गोट कविताक पुस्तक। कनहा सँ उपर उठाओल तरहथ पर सँ चिरकल



फुलही थारी पिछरि कए निपल-बाहरल आँगन मे जेना खसि पड़ल हो—"ऊँह, कारी छैक।" आँखि आगाँक आखर पर जेना हथोरिया देबय लागल—"भाग्यहीन कें भगवानो संग नहिं दैत छथिन्ह"। एक टा बिसरि देल सन आकृति अपनहिं मोने जेना झोलफल अन्हार मे चल अबैत जकाँ आ' चिनहल सन लागल। छोटे कद, एकहरा देह, श्यामे वर्ण, तेल-विहीन औंठिया केश उपर दिस सीटल जेबा सँ विद्रोह करैत, खधरक कुरता, बंडी आ' चुस्त पायजामा, पएर मे कमकिमती चप्पल, मुखाकृति गंभीर। मैट्रिक पास कऽ कए ग्रामसेवक।

कतबा कहा-कही, घिचा-तिरी आ' थुक्कम-फझैती भेल रहैक ? लगक जेना आइ गाम मे किछु भइए कऽ रहत। नवतुरिया सब कोना नाक मे दम कऽ देने रहैन्ह देबू मिसर कें ?—"एहेन कन्या लेल अधबेसू दुतीबर ? ई अन्याय हमरा लोकनि नहिं होमय दऽ सकैत छी।" नवयुवक-मंडली अपना जिद पर केहेन अड़ि गेल रहए ? मुदा, देबू मिसर जखन कहने रहथिन्ह—"हओ बाबू, हमरा डीहो डाबर बेचने दस हजार टाका हैत जे हम सरोजिनी लेल नीक वर कीनि आनब ? हमरा बेटी बलाय अछि ? तोरा लोकनि की जानय गेलहक जे वर ताकबाक पाछाँ रऽने-बऽने कोना हम बउएलहुँ अछि ? दइ जाह हमरा लड़का। कन्या हमर राखनजोग नहिं अछि। एहि सुध मे तऽ कथा हम करबे करब"—तऽ कोना ककरो मुँह सँ बकार नहिं फुटल रहैक ? आ' तखन अपन विजय निश्चित बुझि कए आ' गिरीश कें संबोधित कए जखन ओ कहने रहथिन्ह—"हओ अगुआवाहन, तोरे बाप जकाँ हमरा लाखराज-बरम्होतर नहिं भेटल अछि जे हम ताहि बल पर कूदब। हमरा सब छी गरीब आदमी, मुदा हमरो लोकनिक इज्जति अछि। हमरा दरवजा पर दस टा कुटुम आओत। हम एखनहिं परचारि दैत छियौह। जँ कोनो अनट-बिलट किछु भेल तऽ पाछाँ कऽ हमर कियो दोख नहिं दिअए। जाइ जाह अपना-अपना घर।"

आ' जखन गिरीश ई सुनि कए अत्यन्त गंभीर भए बाजल छलाह—"हम अहाँ कें वर दैत छी। आइ अहाँ विवाह करू, मुदा दुतीवर सँ नहिं करू"—तऽ हुनकर संगबए सब अवाक् भए गेल छलथिन्ह जे कोना हुनकर मुँह कनेको

मलीन नहिं भेलैन्ह । देबू मिसर कें अक-बक किछु टा नहिं चललैन्ह जखन विवाह सँ एक दिन पहिनहिं 'शैलू'क हाथ पकरय दू गोटए सँ हुनका पठा कए पहिलुक वरागत कें मनाहीक चिट्ठी ओ अपनहिं हाथें लिख देने छलथिन्ह । हमरे टा बुझल अछि जे गिरीश विवाह सँ वधु-प्रवेश धरि अपना कोठली सँ बहार पएर नहिं रखने छलाह, विवाहक वर-व्यवस्था लेल अपना जऽन-बरिजना सब कें पठा देने रहथिन्ह ।

मोन आशंका सँ भरि उठल । नहिं जानि कियैक एक क्षणक हेतु उद्विग्न भए उठलहुँ । आगाँक आखर सोझहिं मे छल —"ई एखन गामहिं छथि ।" आश्वस्त भेलहुँ । "हाकिम सँ झगड़ा भए गेलैन्ह ।" मोन खिन्न भए गेल । आदमी आवेश मे केहेन-केहेन गलती कए बैसइत अछि । बेचारी सरोजिनी । तेना आगाँ बढ़ए लगलहुँ जेना कच्छाछोप पानि मे पएर थेघैत लोक डेग उठबैत अछि । "हिनका सँ नुका कए ई चिट्ठी लिख रहल छी । हिनकर कसूर नहिं रहैन्ह । इहो सएह कहैत छथि । कहइत छथि जे हमर गलती नहि अछि । हमरा किछु नहि फुरैत अछि, ई हाकिम एहेन कियैक छैक । संगी-साथी गलती मानि लेबय कहैत छन्हि । हमरो मुँह सँ एक दिन सएह बहरा गेल तऽ कहलैन्ह—"अहाँ कें हमर काज अछि कि हमरा नोकरीक ?" देह सिहरि उठल । अहाँ कें की नहिं बुझल अछि ? हमर तकदीर तऽ जन्महिं सँ फुटल अछि । की करइत की हैत के कहए ? मुँह मे धान दइत छी तऽ लाबा होइ अए । ने किछु कहने बनइत अछि ने चुप रहने । हमरा तऽ करिया अच्छर मैंस बराबर अछि । अहीं किछु लिखियौन्ह ने ? हमर चर्च चिट्ठी मे नहिं होअए, हमर तकदीर फुटि जायत । बड़ भरोस छन्हि हमर । हम तऽ सब किछु सहितहिं एलहुँ अछि. सहियारि लेब । अहाँ केर हमरा बड़ भरोस अछि ।"

जेना भरिये जांघ पानि मे ठाढ़ भऽ कए कियो हाथ लऽ कए बड़ी जोर सँ ओकरा हिलकोरि कए छोड़ि देने होइक आ' सबटा फेन, फोका, बुनबुना बहि कए कात लागि गेल होइक । बड़ी काल पर दम लेल जकाँ जोर सँ साँस अपनहिं जेना घिचा गेल आ' मुँह सँ ओही बीच सँ बहरा गेल—"एकटा चिट्ठी अवस्से लिख देबाक चाही ।"



# चीरल पन्ना जोड़ल पाँती

अपराजिताक डबडबायल आँखिक नोर सम्हार मे नहियें एलैन्ह। जावत ओ मुड़ी छिपथि-छिपथि, दू-तीन टा ठोप मे सँ एक टा धब दऽ चिठियहि पर खसि पड़लैन्ह। दू टा पाँती केर अच्छर सब परक रोसनाइ उखड़ि कए ओहि ठोप सब पर डाँरि जकाँ भऽ कए हेलय लगलैक। किछु घबरियायल जकाँ बामा हाथें ओ झट दऽ जे ओकरा पोछि देलथिन्ह तऽ तीन-चारि टा पाँती केर सब टा अच्छर लेपा कए एकबट भए गेलैन्ह। मुँह सँ "च्-च्" बहरा गेलैन्ह। करुण भावें चिट्ठी दिस ओ ताकय लगलीह। उपर सँ निचाँ धरि फेर एक बेर चिट्ठी जेना पढ़ल जाय लागल—

प्रिय,

नहि जानि, ई 'प्रिय' संबोधन अहाँ लेल हमरा अनचिनहार कियैक लगैत अछि। अहाँ छी पुरुष आ' सेहो अज्ञात कुलशील, मुदा अहाँ पुरुष छी इएह कि हमरा लेल कम डेराओन अछि जे हम अहाँक कुलशील केर टोहि लगाउ ? हम तऽ अहाँ कें जनितहिं छी कारण, जे हम स्त्री छी। हमरा-अहाँ मे तऽ, हमरा जनैत, एके टा संबंध अछिए। अहाँक संबंधें हमरा आँखि मे नोरक

समुद्र उमड़य इएह टा आइ धरि होइत आयल अछि, ई ककरा नहिं बुझल छैक ? आ' तखन होइत अछि जे एहू चिट्ठी कें पहिलुका आर सब चिट्ठी जकाँ हम टुकड़ी-पुरजी कए दी। मुदा, की कहू, लिखितहिं-लिखितहिं एकटा मोह सन भए अबैत अछि। अधखरए चिट्ठी कें चीर-चारि कए जे एकबट कए दैत छियैक तऽ पाछाँ कए जे एक टा मोह मोन मे रहैत अछि से अहाँक प्रति नहिं, अपना भावक प्रति…।—आ' फेर उमड़ि एलैन्ह नोर अपराजिताक आँखि मे। एकक टा आखर जेना दू-दू टा देखि पड़ए लगलैन्ह। भरि चिट्ठी केर आखर सब जेना लेपाय लगलैक। जे देखय लगलीह से बुझि नहिं पड़लन्हि जे देखैत छी, कि सुनैत छी, कि सोचैत छी। करइत ओ किछु होथु, मुदा जे किछ रहैक से इएह—"हे हए सगतोरनी छौंड़ो सब…!! तों सब बड़ए परिक जाइत गेलीह अछि हमरा खेत ! आइ आबए दइ जाह ! हऽ…हऽ…एहि टोलक छोंड़ी सब तऽ नगर-उजारैन भए गेलैक अछि। दस बरखक होइ जाइ गेलैक, के कहतैक ? बिचार उठा-उठा कए जेना पीबि गेलैक अछि। कहू तऽ सब टा केरावक मुड़ी उजाड़ने जाइत अछि ! पेट मे अगराही लागल रहैत छैक"—कनियाँकाकी अपना आँगनक मुँहथरि पर सँ जे गरजि उठलीह तऽ नऽब बाउग भेल खेत मे घुटकैत चरि रहल परवाक हेंज केर बीचहि मे जेना माटिक ढेप खसि पड़लैक। पथिया, मौनी, खोंछि आ' मुट्ठी सम्हारैत—"बापरे, पराइ जो गए, चिकरलौ बुढ़िया…"—कहि टोलक सगतोरनी छौंड़ी सभक ओ हेंज जेना फुर्र दऽ उड़ि गेल। बाधक फुलायल सरिसो पछवाक लहरि मे सूखय लेल चार पर फेकल पियर बुन्न नुआ जकाँ जेना उड़िया गेलैक। आरि-धुर नँघइत, खसइत-परइत ओ हेंज बीच बाध केर चतरलहा आमक गाछ तर टलियेबा लेल जेकल नार पर भट-भट खसि पड़ल तऽ ओकरे सभक संग चल अबैत हँसीक एक टा हिलकोर गाछ तर मे तेना छापल चल गेलैक जेना मछहरि होइत पोखरिक हिलकोरल पानि मे टापीक छाप तर सब तुरक कतेको माछ पड़ि गेल होइक।

कनेक काल धरि हँसीक ओ छलमली ओहनाक ओहने रहि गेलैक आ' कि बिचहि मे कोमहर सँ तऽ ओही नार पर एक टा आँचर पसरि गेल।



खेसारी आ' केरावक फोंकायल लौबजा मुड़ी सब दिस सँ ओहि आँचर पर जमा भए गेल। जोरगर मुट्ठी सभक लाले-लाल तरहत्थी सब ओहि ढेरी केर मोचरा बनेबाक पाछाँ हरियरे-हरियर भए गेल। आँचरक गेठरी मे बान्हल बुकनी नोन आ' हरियर लंगी मिरचाइ सेहो बहार भेल। चुटकीक चुटकी बुकनी नोन ओहि मोचरल मुड़ी सब कें सोअदगर बनबय लागल। मुदा खोंटि कए देल लँगी मिरचाइक एको टा टुकड़ी मुँह मे पड़ितहिं आमक फाँको सन-सन आँखि मे भरि-भरि आँखि नोर आबय लगलैक। आ' तखन दुइए-चारि टा हाथ सोअदगर मोचराक सुआद लैत रहल। मुदा कोनो एहेन मुँह नहिं रहैक जे सुसुआइत नहिं हो।

"हँ गए दाइ सब, हमरे खेतक खेसारी केरावक मुड़ी केर मोचरा बनबइ जाइ गेलैंह अछि आ' तेहेन कऽरू कए देलही जे हमरे ने खायल गेल"—कहि कए आ' हँसि कए जे मुँह फिरा लेलन्हि से छलीह संध्या। ओ जखन मुँह फिरा लेलन्हि तऽ हुनकर गोर अदक्क मुँह लाल ओढ़ल भए गेल छलैन्ह।

"हँ साँचे गए दाइ, एकरे खेतक खेसारी आ' केरावक मोचरा एकरे ने पैठ भेलैक ई नीक बात नहिं"—कहि कए एक कौर मोचरा मिरचाइक खुंडी देखि कए जे संध्याक मुँह मे खोआ देलथिन्ह ओ छलीह अपराजिता। देखबा मे तऽ लगैत छलीह पन्दरहक लक-धक केर मुदा चलि रहल छलैन्ह तेरहमे। संध्या सँ एक बरखक जेठ। गाम आबि कए सखी-बहिनपाक संग जखन साड़िये पहिरि कए बहराइत छलीह तऽ बुढ़-पुरान सब कें बियाहन जोग लगैत छलथिन्ह। माय कें एकाध बेर इहो कहल जाइत सुनि लैत छलीह—"कनियाँ अहाँक धिया-पुताक देह मे बड्ड बाढ़ि। केहेन हुहुआय कए बढ़ल जाइत अछि ? उमेर कि छैक ? बुझि पड़ै अए बर-घर देखहि पड़त आब। देखैत छियैक कि ? आ' माय केर हँ-हूँ सुनबाक फुरसति अपराजिता कें रहितहिं ने छलैन्ह।

—एक बेर फेर हँसीक पैघ हिलकोर चारू दिस सँ आयल छलैक आ' संध्याक लाल ओढ़ूल गाल खूब जोर सँ घैंचि कए एक टा थापर लागल सन भए गेल छलैन्ह। हुनका भरल चल अबैत देह-मुँह मे पैघ-पैघ आँखि केर

उपरका-निचला पल आ' कारी-कारी साफ झलकैत पिपनियों सब ऊब-डूब होमय लागल छलैन्ह । आ' ओहि हिलकोरहि पर हुनका आँखिक नोर जेना ढरकि गेल छलैन्ह ।

—कि, नहि जानि कोमहर सँ, सब सँ जोरगर दू टा हूाथक दुनू बाकुट आँचर परक सब टा करुआहा मोचरा समेटि नेने छलैक । जेना आरि-धुर पर उदकैत-फुदकैत बगेरी-फल्लक सभक हेंज केर बिचहि सँ अचक्के मे सुरु-किया मारि कए चिलहोरि चाँगुर मे आँखिफोरा लऽ पड़ायल हो ।

"चोरनियों सब हए, एहेन सुन्नर मोचरा जे तों सब चोरा कए खाइत छलीह से कि बुझैत गेलहक जे हमरा पते ने लागत ? हमरा तऽ छऽकठवे मे हरियर लँगी मिरचाइक गन्ह लागल । हम कहलहुँ जे जरूर ई चोरनियाँ सभक किरदानी थीक । मुदा हमरा सँ बचि कए जइतीह कतए तोरा लोकनि ? एहेन सुअदगर मोचरा एकसरे-एकसरे खेनाइ ?"—आ' जखन विनय केर एक टा भरिगर बाकुट खलिया गेल छलैन्ह तऽ ओ कि जानय गेलथिन्ह जे तीन-चारि टा बक् दऽ सन बारल हाथ सभक कंठ में चलल अबैत हिचकी रस्तहि मे रहि गेल छलैक ?

—"हँ हओ भैया, मोचरा खेबाक बेर तऽ बकरी महँक हुरार बनि गेलह अछि आ' जखन अपने सुगबा बइर पर चढ़ैत छऽ तऽ खेखनियाँ करइत छियौह तइयो ने एको टा पाकल बइर जुरैत छौह ।"—एक बेर संध्याक मुँह दिस ताकि कए उपर सँ निचाँ धरि अपराजिता विनय कें देखब शुरू केलथिन्ह—कोनो बेसी नाम नहि, चाकर-चौरस नहि, गोर अदक्को नहि, देह दुबर नहि तऽ पुष्टो नहि, आँखियो नमहर-नमहर नहि, मुदा मुँह मे पानिक कमी नहि । खूब साफ उज्जर धोती पर उज्जर धप-धप कमीज आ' ताहि पर हाथक बुनल हरियर हाफ स्वेटर धरि पहुँचलो नहि छलैन्ह अपराजिताक नजरि कि—"भैया छियै, हमर विनय भैया । पटना मे पढ़ैत छैक"—हुलसित भए कऽ संध्या बाजलि छलीह । विनय केर बाकुट खलिया गेल छलैन्ह । अपराजिताक मोन केर 'कें', 'कतऽ' 'कहाँ' सभटाक उतारा जेना एतबहि मे भेट गेल छलैन्ह ।



आ' कि विनय बाजि उठल छलाह—"बड़ए बात गढ़ैत छहक दाइ, पटना मे पढ़ैत छैक, हम नाँव कटा कए घऽरो बैसलहुँ । आइ जाहक बुढ़िया घस-डेङ्गओना सुढ़िया कए रखने छौह । पीठ पर डँगफार देतौह तखन बात गढ़ब बहरेतौह ।"

—"हँ, तोरे डँगफार देतौह । सभक हिस्सा भकोसि लेलहक अए तऽ आब बजबह कि, बात कें बहलबइ छहक"—विनय कें चुपे कऽ देबाक भावें संध्या बजलीह ।

"चल गए डनियाही, जाइ छियौक बइर तोड़ए, मुदा तोहर नजरि जे लागि जेतैक तऽ सबटा पीरा बइर हरियर भऽ जेतैक से ?"

—आ' विनय खूब जोर सँ "चलइ चऽल……" कहि बइरिक गाछ कें ठिका नेने छलाह । नार परक हेंज फुरफुरा कए उठि हुनकहि पाछाँ जौ, गहुम मीसरी, तीसी, खेसारी सब कें धङ्गैत दौड़ि गेल छल । दौड़लि रहथि अपराजितो, मुदा हुनका जेना दौड़ल जाइते नहि छलैन्ह पछूआ गेलि छलीह आ' आरि धऽ कए नहूँ-नहूँ चलए लागि गेलि छलीह ।

पाछाँ फिरि कए देखितहिं संध्या केर ठाढ़ि भऽ कए—"दौड़-दौड़ दौड़,ने गए, पछुएलही कियैक?"—पुछला पर एतबैक जवाब अपराजिता कें फुरल छलैन्ह—"हम नञ दौड़बौक दाइ ।" संध्यो हुनके संग लागि गेलि छलीह—"हमरा पिउसीक बेटा थिकैक । बड़ सुन्नर सोभाव छैक । एकेटा विनये भैया टा छैक बस, ने भाय, ने बहिन । हमर पिउसी विधवा ने छैक ? तेहेन-तेहेन बात बजतौक जे लोक हहारो देमय लगैत छैक ।

संध्याक एतबहि बात मे तऽ बइरिक गाछे आबि गेल छलैक । विनय बइरिक ठाढ़ि दोमि देने छलथिन्ह । एकक टा पीरा बइर पर चारि-चारि गोटए धुसि-धुसि खसैत छलैक । संध्या गाछ तर पएरे देने छलीह कि जेना विनय धपओनहि छलाह, बिन काँटवला ठाढ़ि पकड़ि कए हुनका आगुअहि मे धब दऽ कुदि गेलाह कि संध्या चौंकि उठलीह । अपराजिताक तऽ जेना कोंढ़े उनटि गेलन्हि । आ' संध्या जे डेरा उठलि छलीह से देखि कमला, बिसला, अनू, बिन्दा, चंपा सब हँसैत-हँसैत लोट-पोट भए गेल छलीह । संध्या रूसलि जकाँ

भए गेलि छलीह—''जा, हम एकोटा बइर बिछबे नहिं करब''—मुदा अपराजिताक मोन बड़ी काल धरि थीर नहि भेल छलैन्ह ।

टावरक घड़ी पहिने घन्‌न्‌न्‌···केलकैक आ' फेर एके बेर टनाक् दऽ उठलैक तऽ अपराजिता बुझि नहिं सकलीह जे साढ़े बारह बजलैक, कि एक, कि डेढ़ । एक टा मोटका गिरगिट देवाल पर नहिं जानि कियैक दोसर दुबर सन गिरगिट कें खिहारलकैक, मुदा थोड़बैक दूर दौड़ि कए ठाढ़ भए गेलैक आ' गरदनि उठा कए टिक्-टि्क-टिक्-टिक् कए उठलैक । अपराजिता चिट्ठी हाथ मे उठा नेने छलीह—''उपर सँ निचाँ फेर-फेर अपने लिखल चिट्ठी पढ़ैत छी तऽ होइत अछि जे अहाँक नामे लिखल ओहि चिट्ठी कें करेज सँ लगा ली, आ' सरिपों हम ओकरा करेज सँ सटा लैत छी आ' बस आँखि मे नोर उमड़ि अबैत अछि । चारू दिस ताकि कए ओहि दहो-बहो नोर कें आँचर मे समेटि लैत छी, एको बुन ओ नोर भुइयाँ पर नहिं खसए दैत छियैक । अहाँक संबधें बहइत ओहि नोर कें आँचर मे जे समेटि लैत छी तऽ लगैत अछि जेना हम अहीं कें अपना आँचरक छाहरि मे लऽ नेने होइ । लगैत अछि जेना हमरा ओ स बकिछु भेटि गेल हो जाहि हेतु हम, नहिं जानि. कतबा जन्म सँ स्त्री भऽ कए जनमैत आ' तड़पैत एलहुँ अछि । आ' नजरि मे तखनहिं एक टा चित्र अबैत अछि, ओहि चिनहल-जानल केर, जे अहाँ छी । अहाँ ओ नहिं छी जकरा हम पुरुष कहलियैक अछि । अहाँ ओ सब किछु छी, मुदा अहाँ कोमल छी, ठीक हमरे भाव जकाँ, हमरे नोर जकाँ लावण्यमय । हमरा संबंधें जाहि मे कनेको किछु कठोर नहिं छैक । आ' तखन अहाँ सरिपों 'हमर अहाँ' लागऽ लगैत छी । हमरा मोन मे एक टा समुद्र लहरि लेमय लगैत अछि । बाँस-बाँस धरि ऊँच ओ लहरि उठैत छैक, ओहू सँ ओहिकात । हमर सब टा मोह, माने सब टा हम, ओहि लहरि मे ऊब-डूब होमय लगैत छी कि जेना लहरि सब लाले-लाल भए उठैत छैक । सब किछु चारू कात सूझए लगैत छैक, सब टा, सब किछु लाले-लाल ।



—आ',नहिं जानि कियैक, एक टा पैघ सन ठोप नोर केर कोना चिठियहि पर फेर खसि पड़लैन्ह । एहि बेर अपराजिता कें अपने ओहि नोरक अर्थ नहिं लगलैन्ह आँचर सँ ओहि नोर कें ओ तत्काले पोछि लेलन्हि ।

''ढक्-ढक्''···''ढक्-ढक्''—दुरुखा लगक केवाड़ ढकढका उठलैक । 'घुरना ! घुरना रौ !! खोल केवाड़ । दुरुखा लगक केवाड़ आ' अप्पोक माय केर कोठली दुनू एके बेर फुजलैक । अपना सहज ऊँच स्वर कें मद्धिम बनेबाक असफल चेष्टा करैत अप्पोक माय जिज्ञासाक लगाम ढील कऽ देलथिन्ह—''समधियौरक तिमन-तरकारी बड़ नीक लागल ? किछु सिझबो-पकबो कएल कि अहू ठाम सब धान बाइसे पसेरी ?''—''वरक माय केर मोन तऽ जे काल्हि होअए से आइए भऽ जाय । मुदा मोसम्माति बेचारी कें तऽ बेटे लऽ कए उदय-परलय छैक ओ बाजत कि ? हमरे नेहोरा करए लागलि जे अपने सँ पटना जाउ, आ' बौआ कें विवाह-लेल राजी कऽ लियऽ । कथा हमरा पसिन अछि ।''—आँगन मे एक कात राखल चौकी पर बइसइत पारस बाबू बजलाह । ''बेटा एना हाथ सँ बहार कियैक छैक ? सुनलियैक तऽ जे माइक बात कटितहिं ने छैक''—शंका मिश्रित व्यंग्यक स्वर मे अप्पोक माय पुछलथिन्ह ।

''एहि सुद्ध-लेल राजी नहिं छथि । एम० ए०-परीक्षा दइए कऽ विवाह करए चाहैत छथि । लगइत अछि पटना जाइयहि पड़त''—पारसबाबू कहलथिन्ह ।

''के कहए जे ककरा मोन मे की छैक ? जाउ, अहू फूसि कें नेङ्गरा आउ । हमरा तऽ भरोस नहिं अछि''—कहि कए अप्पोक माय लोटा मे पानि लाबय चलि गेलीह ।

अपराजिता कें बुझि नहिं पड़लैन्ह जे हाथ थरथराइत छलैन्ह, कि हाथक चिट्ठी, आ' कि मोने मे थरथरी पैसि गेल छलैन्ह । एक बेर अपना मोन कें ओ कड़ा केलैन्ह आ' चिट्ठी कें चारि चीरा कए देलथिन्ह । थरथराइते हाथें ओ कोठलीक बत्ती मिझा देलथिन्ह आ' धम्म दए जेना बिछावन पर खसि पड़लीह······!